Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

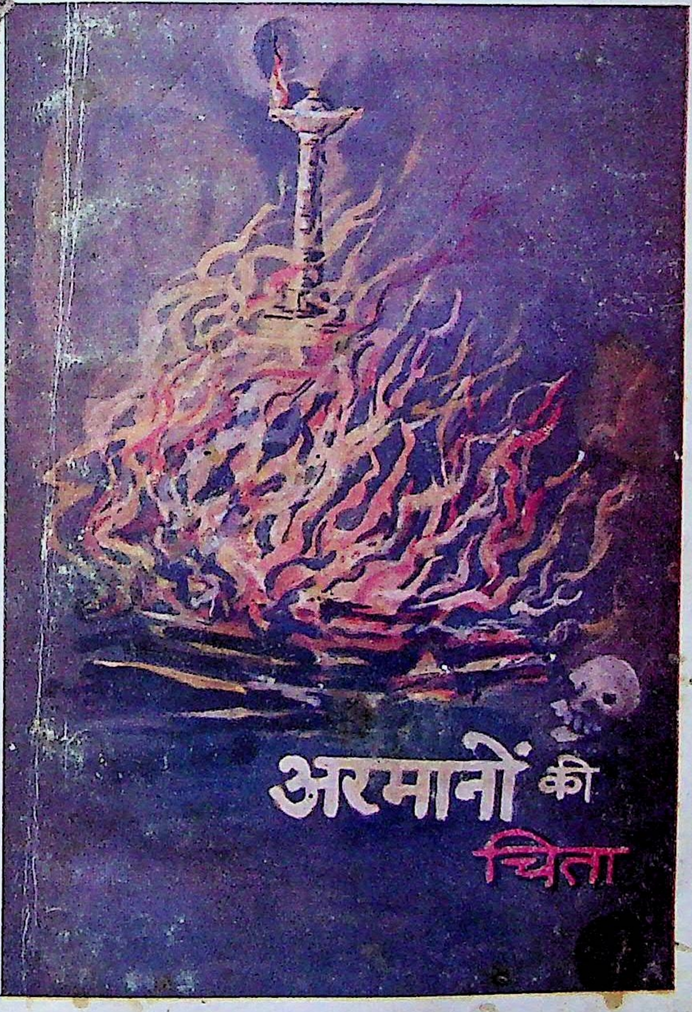

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहित्य सुमन माला—१३

अरमानों की चिता

Aarmano ki ~~a~~ chita

लेखक

दीनानाथ व्यास विशारद, कविरत्न

["हृदय का भार" के लेखक]

Dinanath vayas visarad.

SPS
891.431 D 45 A
15245

प्रकाशक

छात्रहितकारी पुस्तकमाला,

दारागंज, प्रयाग।

chatarhit kari pustkmala, paryag.

प्रथम संस्करण] जनवरी १९४१ [मू० ॥=)

1941

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकाशक
श्री केदारनाथ गुप्त, एम० ए०
प्रोप्राइटरः—छात्रहितकारी पुस्तकमाला,
दारागंज, प्रयाग।

acc: no: 15245
Rs 0-10-0
94

मुद्रक
श्री रघुनाथप्रसाद वर्मा
नागरी प्रेस, दारागंज,
प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

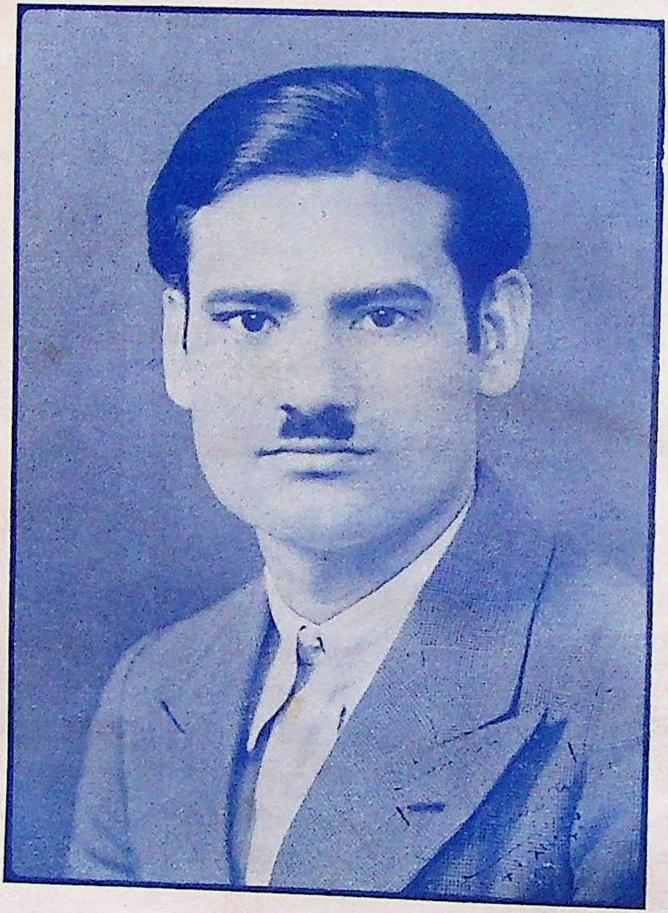

पण्डित लक्ष्मीचन्द वाजपेयी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समर्पण

जो अपने अनजान में आँखों की राह दिल में उतर
गया; जिसने जीवन को एक अजीब
सी दुनिया में ला पटका; जो
संयोग में बहुत दूर और
वियोग की घड़ियों में इतना
नज़दीक है उसी
कानपुर निवासी
पण्डित लक्ष्मीचन्द वाजपेयी
को
सप्रेम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक दृष्टि

यह 'अरमानों की चिता' है और मैं स्वयं अरमान हूँ । इसमें वेदना के गान हैं और मैं वेदना पर व्यंग्य-हास हूँ। ऐसी परिस्थिति में 'अरमानों की चिता' के सम्बन्ध में मेरा क्या वक्तव्य हो सकता है, यह स्पष्ट है। किन्तु इस स्थिति का एक दूसरा दृष्टिकोण भी है। मेरे पास देने को अगर कुछ है तो वह एक मात्र आशा है। अतएव भाई दीनानाथ जी को मैं निराश कैसे कर सकता हूँ।

आज अपने मान्य साहित्य समीक्षकों से सुनता हूँ—अजी यह तो कोरा निराशावाद है । प्रगतिवाद की जो आँधी चल रही है, उसमें भी निराशामूलक रचनाओं पर छी-छी का घटा-टोप निरन्तर देखता हूँ। निराशा-मूलक कथाएँ मैंने कम नहीं लिखी हैं। किन्तु आज का मैं केवल निराशा का द्रष्टा तो नहीं हूँ। चेष्टा रूप में जीवन को सरस, उत्फुल्ल, जागरूक, चेतन और कर्म-रत देखना अवश्य ही श्रेयस्कर है। कौन इससे इनकार करेगा ? किन्तु मानता इसे मैं आज के बुद्धिवादी का एक प्रयोग ही हूँ। जीवन निराशा से परे है, या कभी हो सकेगा, कुछ ऐसा कम समझ पाया हूँ। 'एकोरसः करुणएव' की ओर न भी देखें, तो भी निःश्वास और अश्रुपात जीवन के लिए विकासमूलक नहीं हैं, गति उनसे नहीं फूटती, ऐसा मेरा विश्वास नहीं है, अनुभव नहीं है। विद्रोह भी निराशा का ही पदक्षेप है, विजय और सफलता भी निराशा का ही उप-संहार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तो 'अरमानों की चिता' में नामानुरूप निःश्वास-प्रवण रचनाएँ तो होनी ही चाहिए। परन्तु गति के प्रति विरोध मैंने उसमें नहीं पाया। वल्कि कहीं-कहीं तो पथ निर्देश भी उसमें मिला है। यथा—

हँसते-रोते बीती कहते
इस अमिट राह पर चले चलें।

अथवा— करुणा का जग तो है अपार
जिसमें गल-गलकर, पिघल-पिघल,
यह विश्व हृदय बन बहजाता है अश्रुधार।

तो भी—यह वसन्त—यह कोकिल-कलस्वर
यह निर्झरी भरी स्वर मर-मर
यह जलधार प्रवाहित सर-सर
मेरे जीवन में बस ये ही—
धीरे-धीरे तीव्र वेग से
मन माने पर अनजाने से
बन जाते जलते अँगार।

इस प्रकार व्यासजी की इस रचना में युग की स्पष्ट पुकार है। और जहाँ तक अभिव्यञ्जना, भावों की सुकुमारता, गीत की शैली और उसके टेकनीक का सम्बन्ध है, इस काल के समुन्नत कवियों से यत्र-तत्र यत्किंचित प्रभावित होते हुए भी गायन में वैठते वे उनके निकट ही हैं, स्वतंत्र सत्ता भी वे अवश्य रखते हैं। और इन गुणों के साथ, वे सचमुच हिन्दी के लिए आशा के दीप हैं।

दारागंज, प्रयाग
२५—१—४१

भगवतीप्रसाद वाजपेयी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वेदना का "वाद"

१—कापालिक का अट्टहास

तर्कशास्त्री अरस्तू का पहिला सूत्र लेकर चलता है—"मनुष्य मात्र मर्त्य है"। तो कवि "चित्तरंजन" के ढङ्ग पर कहता है—"तोमार ए प्रेम सखि, मरण समान"। तर्कशास्त्री मरण को टोकता है, कवि उससे चौंकता है—और दोनों अमरत्व का ख्वाब देखते हैं। या कहें कि, कवि क्षण क्षण मरता और फिर से जीता है। इसीलिये शायद कविजन तर्क से तर्क करते आये हैं। उमरखय्याम ने कहा है कि—

Divourced barren Reason from my Bed,
And taken the Daughter of Vine to spouse.

और इस दुख्तरे-रज़ा से दोस्ती जोड़ने से क्या कम मज़ेदार व्हिट-मैन का यह सत्य अनुभव है।

Logic and sermons do not appeal me,
the damp of the night drives deeper into my soul

बात असल में यह है कि कौन दिल वाला कवि नहीं होता और कौन दिमाग वाला व्यक्ति तर्क नहीं करता ? और दिल-ओ-दिमाग हर एक के साथ हैं, जैसे जीवन और मरण। ख्वा तर्कशास्त्री हो, ख्वा कवि, मरण के लेखे दोनों यक सां हैं। और शायद उसी अन्तिम सत्य की तरह, यहाँ एक कवि का सरस [दरस-परस के अर्थ में नहीं] पद्य, और एक तर्कशास्त्री का नीरस गद्य, इन्हें जोड़ने की कोशिश है। कवि का नाम "विचित्र" है और तर्काध्यापक मैं, चित्रों से प्रेम रखता हूँ। अब पुस्तक निःसंशय चित्रविचित्र हुए बिना न रहेगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं किसी कविता की किताब की भूमिका की जरूरत नहीं समझता, क्योंकि कविता खुद बोलती है तो फिर उसे मैगाफोन की जरूरत क्या है ? और स्वयं "विचित्र" जी भी अपने कविता संग्रह पर भूमिका रूप किसी "प्रशस्ति' के घोर विरोधी हैं। तिस पर यह छायावादी कविता, जो कि हवाई किलों पर मंडराने वाली एक दम ही हवाई चीज़ है, और जो निसाँसों से सम्बन्ध रखती है भला उसकी "भूमिका" क्या होगी ? और छायावाद की भूमिका हो तो ठोस कैसे हो सकती है ? उस छाया पर मैं "प्रकाश" डालूं भी तो क्या ? कारण, वह छाया है और उसे रहस्य मय ही रहने दें तो ठीक। और छायावादी कविता में भी इस पुस्तक का ऐसा विचित्र नाम "अरमानों की चिता" ! "चिता" की भूमिका ही क्या होगी ?—काष्टवत् ! और "अरमानों" की वाष्पवत् !! तो भी कवि जी ने आग्रह पूर्वक चाहा कि "अरमानों की चिता" के साथ उसका मूल भूत आधार वेदना का "वाद" भी जुड़े और वह भी मैं ही लिखूं। मैंने कविजी से मज़ाक में कहा—"अरमानों की चिता के साथ-साथ वेदना का क्या "वाद" ? यह तो होगा जैसे "कापालिक का अट्टहास" !

इस संग्रह के सब गीत मैं पढ़ गया हूँ, कई कविताओं पर अटका और कुछ पर भटका हूँ; कई गुनगुनाता रहा तो कुछ पर भुनभुनाता भी रहा, कइयों से रीझा तो कुछ पर खीझा भी; कई से आँखें धुंधलाईं तो कई से झुंझलाईं भी। और चूंकि अपने सारे सुख-दुख, जीवन मरण के साथ यह "चिता" आपके सामने ही है, विश्लेषण और ग्राह्य-त्याज्य-निर्णय पाठकों पर ही छोड़ता हूँ। और जैसे शव को अपने अन्तिम पर अवश्यम्भावी स्थल-मरघट पर पहुँचा देने पर, अग्नि दाह होने पर दूसरे लोगो को "दर्शन" सूझता है; चर्चा छिड़ती है, दुनिया की राह पर, खुदा की राह पर, उसी तरह यहाँ बजाय कवि की रचना की टीका टिप्पणी, प्रशंसा आदि करने के—क्योंकि यह तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"विचित्र जी" को भी अभीष्ट नहीं—मैं कवि-मर्म और कवि कर्म पर दो शब्द जो मुझे सूझ रहे हैं, साफ़ साफ़ कह देना चाहता हूँ। यह नहीं कि यह कविता-"मृत" है परन्तु यह कि अमृत की मिठास कड़ौंस हर कोई अपनी अपनी रुचि से चक्खे। रस-दशा वैयक्तिक है, उसे नियम बद्ध करने का हौसला मुझमें नहीं, इसीसे वह ज़ुरअत भी मैं नहीं करता। व्यक्तिशः मेरे मत जो हैं, आगे हैं। संभव हैं वे कइयों को कटु लगें, इसी से कहा न कि वेदना के "वाद" पर लिखना "कपाली का अट्टहास" है।

पर याद रहे, हास हो या रुदन, दोनों जीवन के ही अंग हैं। "सुख दुख की आँख मिचौनी, खोले जीवन अपना मुख"—(पंत); "दुख से अखिल पंक से पंकिल"……"जीवन पथ का दुर्गम तम तल"—(महादेवी;)

देख चुका जो जो आये थे, चले गये,
मेरे प्रिय सब बुरे गये, सब भले गये,
चिन्ताएँ, बाधाएँ
आती हैं तो आयें,
मैं ही क्या, सब ही तो ऐसे छले गये!—(निराला)

और शायद इसी भाव से प्रेरित हो कर हज़रत जिगर ने फ़रमाया है कि—

एक ऐसा भी वक्त होता है,
मुस्कराहट भी आह होती है!

वर्ड्सवर्थ अपने "Intimations of Immortality" में कहता है—

We will grieve not, rather find,
Strength in what remains behind,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

In the soothing thoughts that spring,
Out of human suffering,
In the faith that looks through Death,
In years that bring the philosophic mind.

२—दाह-मन्त्र या दकियानूसी से हट कर

कविता से मुझे बचपन से शौक है। जिस जिस भाषा में समझ की पहुँच हो सकी, जहाँ जहां कविता पाई, चख गया—पी गया, और कविता शर्बत के मानिंद होने से पचाने का तो सवाल ही नहीं था। हिन्दी की कविता का तो यह हाल है कि गये पांच-छः बरस से शायद ही कोई प्रकाशित कविता-संग्रह बिना पढ़े रह गया हो। और इन कविता संग्रहों के साथ मैंने भूमिकाएँ भी कइयों पढ़ी। अक्सर भूमिकाओं में कहीं कवि का आरंभ में निवेदनमय आत्म समर्थन मिला—जैसे "पल्लव" या "रश्मि" या "रागिणी" या "यशोधरा" की भूमिकाएँ—तो कहीं कवि की भावुकता ही छलछला रही थी।—जैसे "मधुशाला" और "अनुभूति" की भूमिकाएँ—,कहीं कवि स्वयम् अपना आलोचक बनकर तटस्थ विहंगम सिंहावलोकन कर रहा है—जैसे "विजनवती" "विसर्जन" और "कुंकुम" की भूमिकाएँ—, तो कहीं प्रचार का तीव्र आग्रह अथवा अनात्मिका छानबीन है।—जैसे "उद्धव शतक" या "चोखे-चुभते चौपदे" की भूमिकाएँ—, और कहीं कहीं अन्य विज्ञ समालोचक अथवा कलाकारों के प्रशस्ति पत्र विद्यमान हैं यथा "नीहार" में "हरिऔध" का, "रेणुका" में "एक भारतीय आत्मा" का, "वेदना" और "राका" में जैनेन्द्र का, "शेफाली" में अज्ञेय और हजारीप्रसाद द्विवेदी का, "अपराजिता" में नन्ददुलारे वाजपेयी का प्रास्ताविक आदि—परन्तु एक तो कवि स्वयम् अपना अच्छा और प्रामाणिक जज नहीं हो सकता इसलिये, और कवि के मित्र तो इस कार्य के लिये और भी अयोग्य हैं इसलिये, मेरा, इतनी सारी भूमिकाओं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के बाद भी समाधान नहीं हुआ। और एक बात से मुझे खास चिढ़ है कि कहीं कहीं वही दकियानूसी तरीका अख्तियार किया जाता है कि कर रहे हैं बिस्मिल्लाह! कविता क्या है! मैं यहाँ स्वतंत्र हूँ कि स्वयं "विचित्र जी" इस प्रकृति के कवि नहीं "विचित्रजी" तो तू तू मैं मैं और हल्ले गुल्ले से कोसों भागते हैं। कविता का "क" क्या है, "वि" क्या है, "ता" क्या है, फिर कविता क्या थी, क्या है, क्या होगी, क्या होना चाहिये, क्या शायद हो-सकती-है? क्या-शायद-हो-नहीं-सकती?—आदि बातों को उबा देने वाला विवरण या फिर एक विशिष्ट मतावली का एकांगी प्रचार अथवा पंडित पद्मसिंह शर्मा के ढङ्ग की बेइन्तहा दाद और लफ़्फ़ाजी! इस भूमिका में इन सब दोषों से बचने की पूरी कोशिश करता हुआ मैं चाहता हूँ कि दकियानूसी से हटकर, हिन्दी कविता का पाठक, कुछ मूलग्राही बातों पर सब्र और आवश्यक ज़ब्र के साथ, मेरे साथ साथ सोचे। वे बातें पांच हैं:—

१—कवि का दुख और दुनिया का दुख।

२—वेदना का "वाद": कारण-मीमांसा।

३—तो क्या कोई उपाय नहीं? मुए चाम की सांस से......

४—हृदय-वाद और रहस्यवाद का असली रुप या रीति का रोना

५—साहित्य में स्वास्थ्य चाहिये यानी जीवन में स्वास्थ्य की स्थापना।

इन पाँच बातों को लेकर कापालिक स-अट्टहास अपना दाहमंत्र आरंभ करता है। दाह मैल के नाश और प्रकाश के प्रसार के लिये आवश्यक है। नहीं तो यह निराशा का शिशिरान्धकार हमारे आंसुओं को बर्फीला, घना और जकड़ा हुआ कर देगा। ज्वाला की इसीलिये जरूरत है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३—"महादुक्खक्खन्धसुत्त" या "ग़में ज़िन्दगी समे ज़िन्दगी"

(मज्झिम-पण्णासक १ वग्ग २) सुत्तपिटक नामक बौद्ध ग्रन्थ से यह कथा यहाँ दी जाती है:—

एक बार भगवान बुद्ध श्रावस्ती में रहते थे, उस समय भिक्षुओं से उन्होंने विषय में सुख क्या ? विषयोपभोग में दुख क्या ? इन प्रश्नों की चर्चा छेड़ी। कहने लगे—विषय में जो आसक्ति है वह बुरी है, उसी से स्पर्द्धा, लूट, खसोट, युद्ध, हिंसा आदि कई बुराइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं। फिर दूसरा प्रश्न भगवान ने पूछा—भिक्षुओ ! सौन्दर्य में मधुरता का अर्थ क्या ? कोई अतिशय रूपमती नवोढ़ा ब्राह्मण कन्या, क्षत्रिय कन्या या वैश्य कन्या देख कर जो सुख उपजता है वही सौन्दर्य की माधुरी है।

पर इस सौन्दर्य में दोष कौनसा है ? भिक्षुओ ! वह तरुणी जब वृद्धा हो जाय, उसकी पीठ झुक जाय, बाल सफेद हो जांय, गर्दन हिलने लगे, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ने लग जाँय, बिना लकड़ी के सहारे चलना नहीं बने तब वह सौन्दर्य विकृत हो गया ऐसा समझते हो न ?

हाँ भदन्त ! सब भिक्षु बोल उठे।

यही इस सौंदर्य का दोष है, ऐसा मैं कहता हूँ। भिक्षुओ ! उसी सुन्दरी का प्रेत स्मशान में कौए या गृद्धों ने नोच डाला हो तो उसके सौंदर्य में विकार उत्पन्न हुआ, यह मानते हो न ?

हा भदन्त !—सब भिक्षु बोले।

तो ऐसे सौन्दर्य से आसक्ति न रखना ही, उसके दोष से बचने का एकमात्र मार्ग है। सौन्दर्य की माधुरी कैसी, उसके दोष क्या, उससे मुक्ति किस प्रकार है ? आदि जिस श्रमण ब्राह्मण ने जाना वही उससे मुक्त हुआ और दूसरों को भी उससे मुक्त कर सकता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कथा का अन्तिम अंश चाहे मान्य हो या न हो बुद्ध की वेदना के सम्बन्ध में जो कारण मीमांसा है वह इस प्रकार है:—

वेदना
|
तृष्णा
|
पर्येषण।
|
लाभ
|
विनिश्चय
|
छन्दराग (प्रयत्नेच्छा)
|
अध्यवसाय
|
परिग्रह
|
मात्सर्य
|
आरक्षा

आरक्षा अथवा स्व-संरक्षण (self-preservation) इसी पाशवी विकार को मैकडूगल फ्रायड आदि नवीन मनोवैज्ञानिकों ने मनुष्य की सब कृतियों के मूल में माना है।

आत्म रक्षा की उन मनोवैज्ञानिकों के अनुसार दो धाराएँ हैं:—अन्न शोध और यौन शोध (Bread-seeking and mate-seeking)। हमारे हिन्दी पाठकों को कविता की भूमिका में इन "शीष्णोंदर परायण" तत्वों का चर्चा अटपटा लगी पर भूलना नहीं है कि कवि भी सामाजिक प्राणी है उस नाते वह समाज संघर्ष से अछूता नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मनुष्य की इन दो आदिम क्षुधाओं के अतिरिक्त, सभ्यता के साथ साथ बढ़ी हुई सुविधा, समृद्धि और खाली अवकाश के साथ आई हुई एक नई क्षुधा है—बौद्धिक या हार्दिक (ज्यादह हवाई शब्दों में कहें तो आत्मिक) मगर '' हृदय'' शब्द का प्रयोग करते हुए, मुझे यह बात कभी नहीं भूलती कि शरीर रचना के अनुसार उस हृदय के ऊर्ध्व में ज्यों मस्तिष्क त्यों अधो भाग में उदर है। इस ऊधोरूर्ध्व के मिलन से "हृदय" को छिपाने वाली एक और चीज सभ्य मानव समाज ने निर्माण की है ''जेब''। जेब के साथ ही साथ जेब नीति का महत्वपूर्ण पहलू "अपनी अपनी जेब" भी ईजाद हुआ (Pocket-morality and private property)......।

उतनी प्राणी शास्त्रागत और समाज शास्त्रागत चर्चा के गहरे में न जाते हुए, एक मामूली बात कह देना चाहता हूँ और वह यह कि जितनी ही जेब खाली होती है उतना ही जेब के नीचे का दिल भर भर आता है और जितना ही जेब भरा फूला होता है दिल रीता।

अतः हिन्दी कवियों में जो वेदना वाद है वह एक प्रकार का छुटकारा है, विस्मृति है, अफीम है और वास्तव से भागने की राह—Escape—है। ''रश्मि'' की भूमिका में कवियित्री ने इसी बात की सफाई दी है। "अनुभूति" के कवि ने 'आभास" नामक भूमिका में रवि बाबू के ये शब्द दुहराते हुए कि ' मेरे जन्म जन्मान्तर की वेदने! तू ही मेरे अनन्त जीवन की एकान्त साधना है" यह कुबूल किया है कि जहाँ "मानव वेदना मानव, हृदय का पवित्रतम अहंकार है" "सहृदयता का दूसरा नाम कवि-वेदना है"—(पृ० ८-९)। पण्डित नन्द दुलारे वाजपेयी जैसे मान्य समालोचक भी ''अपराजिता'' की भूमिका में इस "दुखवाद" का समर्थन करते जान पड़ते हैं (पृ० १५)। ''कुंकुम'' और "प्रवासी के गीत" के स्वयम् कवियों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

द्वारा लिखित भूमिका रूप आत्म निवेदनों में दुख और रुदन को अप-नाना अहितकर अथवा अप्रीति कर नहीं माना गया है।

पर व्यक्तिशः मुझे "हाय हाय" और सच्ची कविता में बहुत फर्क जान पड़ता है। हिन्दी के कई कविता संग्रहों में ऐसी अप्रस्तुत अश्रु पूजा कहीं कहीं है। मैं उसे व्यक्तिगत तौर पर-अप्रेय और अश्रेय का प्रचार मानता हूँ। मेरे मत से आरक्षा और मृत्यु भय-सामान्य भाषामें कायरता, का पुरुषता-में से यह निराशावादी वेदना-वाद उपजता है। इस अश्रु पूजक साहित्य के पीछे आज की हमारे राष्ट्र की आर्थिक पराधीनता, दैन्य जन्य मानसिक चांचल्य और यौन अस्वास्थ्य मुझे दीखता है। यहाँ स्वर्गीय डाक्टर इकबाल की दो पंक्तियां याद आती हैं:--

"दमे-ज़िन्दगी रमे ज़िन्दगी
गमे ज़िन्दगी समे ज़िन्दगी।
गमे रम न कर, समे गम न कर,
कि यही है शाने कलन्दरी।"

[जब तक सांस है, वही जीवन गति है; जीवन में दुख तो विष के समान है। गति का दुख न मान, न दुख को विष बना। इसी में तो साधुओं की शान है।]

४—अश्रु पूजा का रहस्य और उद्घाटन

मैंने ऊपर बुद्ध और डा० इकबाल के सहारे अपनी मति से हिन्दी कविता में आये दिन आने वाले आंसू और उच्छ्वास की बाढ़ की कारण मीमांसा की। इस परिच्छेद में कुछ और आक्षेप और शंकाएँ सुझाकर "रहस्य वाद" के नाम पर हिन्दी में जो कुछ घट रहा है उसका उद्घाटन करना चाहता हूँ।

हमारे सौन्दर्यवादियों की ओर से आक्षेप आता है कि वाह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहब ! शैक्सपीयर तक कह गये हैं कि "Beauty's tears are lovelier than her smiles." और आंसू न होते तो भला

"जीवन जलकन से निर्मित सा
चाह-इन्द्र धनु से चित्रित सा"

आदि सुन्दर पंक्तियाँ, महादेवी जी या प्रसाद जी जैसे लेखकों से हम पा सकते थे ! शैक्सपीयर ने स्वयं "Much Ado about Nothing" नामक नाटक में लिखा है कि "Every one can control a grief, but he that has it." [Act 2 scene 2] यानी वह सच्ची दुःखानुभूति के विषय में साशंक हैं। महादेवी जी की सौन्दर्य-दृष्टि अश्रुपूरित न होकर भी, कई स्थलों पर सुन्दर चित्रांकन कर सकी है। और "प्रसाद" जी के "आँसू" जिन्होंने देखे, उन्हें "एकघूंट" के आनन्द नामक नायक के कई वाक्य भी साथ-साथ पढ़ने चाहियें।

इसी से अश्रुपूजक साहित्यिकों का एक दूसरा दल सामने आता है और कहता है—वियोगी होगा पहला कवि,

आह से उपजा होगा गान।

शैले का—"हमारे मधुर से मधुर गीत भी दुख से धोये हैं" और ऑस्कर वाइल्ड महाशय अपने "डी प्राफंडिस" में कह गये हैं कि "Pleasure for the beatiful body, pain for the beautiful soul."—पर इस सारे आक्षेप में समझने की बात इतनी ही है कि साधना की राह में कांटे आँय, संकट आयँ तो भी उन पर आह-उह करने की नज़ाकत जरूरी नहीं। दिल कड़ाकर हंसते हंसते जीवन-रस के वार झेलते चले जावो। वेदनानुभूति का अस्तित्व मैं अस्वीकार नहीं करता। पर मैं मौन सहन-शीलता को ज्यादह मार्क दूंगा, बनिस्बत इस आहो ज़ारी की सार्वजनिक नुमायश से। गुजरात में पद्धति है कि किसी व्यक्ति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के मरने के बाद "बारमू माटे" (बारहवें दिन के लिये) कुछ औरतें रोने के लिये किराये पर न्यौती जाती हैं। हिन्दी कविता का रुआँसा-पन और रिरियाहट करीब-करीब, मेरी व्यक्तिगत राय में, उतना ही 'नक्राश्रु (Crocodile tears) पूर्ण है। और रहीम का पुराना दोहा फिर से दुहराने की तो जरूरत नहीं--

"रहिमन निज मन की व्यथा, मनमें रहिये गोय"
लोग सुनैं सब हांसिहैं, बांटि न लैहैं कोय"

नयनों के निर्झरों से, रीति काल के अत्युक्ति प्रेमी कवियों के समान हिन्दी कविता के आंगन को छोटा मोटा तालाब बना देने वाले हमारे तरुण रुदन-प्रिय गायकों को, राजस्थान जैसे जलहीन प्रदेश की एक अत्यन्त भावुक कवियित्री मीरा की संजीवनी-मंत्र सी एक पंक्ति सूचना के तौर पर कहना चाहता हूँ:--

मन करिले बरिखा, तन करिले कीच

कवियित्री का आशय, शरीर को मिट्टी मानकर मानसिक दुख और शारीरिक वासना के बीच के तारतम्य से है। ब्राउनिंग की "two in a campaign" नामक कविता में ठीक यही भाव है:--

Infinite passion, and the pain
of finite hearts that yearn"

तात्पर्य, मैं उसी कवि या कवियित्री के रोने की कीमत समझता हूँ जो आंसू पीना भी जानता हो अथवा जिसके आंसू बच्चे और निर्बल के आंसू जैसे न होकर अपनी क्षारता में महासागरों की और तरलता में प्रलय वर्षा की आत्मा लिये हों। जिनके आँसू शाब्दिक न होकर, संवेदन तल को निरीऐंद्रेयिक प्रतिक्रिया मात्र न होकर उससे भी गहरे में जाकर एक के नहीं, सबके आंसू हों; जो मिट्टी में बहने के लिये ही नहीं बहते हों पर मिट्टी को उर्वरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बनाने के लिये, शत शत धाराओं में फूट पड़े हों; जिनका रोना सिर्फ मोती पिरोना नहीं, युग का और युग युगान्तर का रोना हो।

उस दृष्टि से मनुष्य की एकाकी वेदना चिरन्तन है। हाल में नाजी अत्याचारों से त्रस्त हो आत्म-हत्या के द्वारा जिन्होंने अपने को बचाने की कोशिश की उन विख्यात पश्चिमी नाटककार अर्न्स्ट टॉलर ने अपने नाटकों की भूमिका में उसी अन्तिम या चरम वेदना का समर्थन करते हुए छिछली और क्षणिक रुदन प्रियता का विरोध किया है। हज़रत जिगर ने अपने शोलए-तूर की भूमिका में वही दुहराया है--"आप मेरे कलाम में बज़ाहिर दर्द का उन्सर बहुत कम पायेंगे, लेकिन ज़रा ठहर कर अगर जज़्बात का ज़ायका लेंगे तो एक बहुत ही नाज़ुक सी मौजे-दर्द ज़रूर महसूस करेंगे।"

उसी अन्तिम वेदना से आर्द्र होकर मीरा की वाणी सिहर उठी थी—"जल-थल भई भस्म की ढेरी, अपने अङ्ग लगाता जा"

५—उपाय; मुए चाम की हाय से—

मैंने ऊपर कहा कि असली वेदना जो मानवता के साथ बँधी है, उसे भूलकर हिन्दी का नया कवि दुख 'वाद' और रहस्य'वाद' में भटक गया है, उलझ गया है। और आँसू-उच्छ्वास-पीड़ा-विरह-वियोग आदि शब्दों का प्रयोग फैशनेबल समझने लगा है। अथवा जैसे मेरे मान्य मित्र "अज्ञेय" ने राजेश्वर गुरु की 'शेफाली' की भूमिका "प्रवेश" में लिखा है:—"अनन्त, शून्य, उस पार, आँसुओं का हार, वेदना के गान, विजन प्रान्तर—ये और ऐसे अनेक शब्द अनायास ही याद आते हैं। आधुनिक छायावाद के ये अस्त्र इतने घिस गये हैं कि उनमें किंचिन्मात्र भी चमत्कार नहीं रह गया है। पाठक की तो बात अलग रही, स्वयम् कवि के लिये ये शब्द कोई अर्थ नहीं रखते।" यह दशा अवश्य शोचनीय है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वैसे सुख दुख आदमी के साथ लगे हैं। जीवन है तो रुकना-बहना गिरना-उठना स्वाभाविक ही हैं। जीवन की महानाट्य-शाला में प्रसादान्त विषादान्त (कॉमेडी-ट्रेजेडी) दोनों तरह के लम्बे-और-छोटे नाटक होते ही रहते हैं, मगर कवि और मनीषी है तो उसे भूलना नहीं है कि वह पात्र नहीं प्रेक्षक है—

किसी के गम में कोई रो रहा है।
कोई पर्दे के पीछे से देखता हो।

उस परदे के पीछे से देखने 'वाले' या 'वाली' का खयाल बहुत जरूरी है। रोना धोना तो चलता ही रहता है। "क्वचिद्वीणा वाद्यम् क्वचिद्मपि हाहन्ति रुदनम्।" कवि की दृष्टि अधिक विराट हो, उसका Vision panoramic हो। तभी वह कीट्स के समान आसानी से गा सकेगा:—

Welcome joy and welcome sorrow,
Come to-day and come to-morrow,
I do love you both together,

रोने का फल्सफा बनाना सभी के लिये खतरनाक—खुद कवि के लिये, कवि के रस-ग्राहक के लिये। इसीसे कवि को आत्मलक्षी—Subjectivity—दृष्टि से उठकर कुछ वस्तु लक्षी—objective होना बहुत जरूरी है। तभी पता लगेगा कि चारों ओर क्रन्दन का कुहराम मचा हो तो भी "तुमुल कोलाहल कलह में मैं हृदय की बात रे मन !"

इस "कामायनी"—कार की अमर पंक्ति के समान, काज़ी नज़रुल इस्लाम की दिलेरी के साथ वह गाता चलेगा—"अमि जहान्नुमेर आगुने बशिया हाँशी पुष्पेर हांशी।" सुविख्यात फ्रेंच शिल्पी रोंदें (Rodin) के एक विराट् शिल्प का विषय है "नरक-द्वार"—Gate of Hell—उसमें उर्ध्व भाग में संघर्ष पूर्ण मानवता की प्रबल स्पर्द्धा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के सूचक चित्रण की पार्श्व भूमि पर मध्यभाग में उठी हुई चिन्तक की मूर्ति है। ऊपर नाना प्रकार की भावनाएँ दरसाते हुए चेहरों की एक कतार है—मुण्डमाल। कवि उस चिन्तक के समान है या कि जैसे जर्मन कवि हाइने का प्रेमिक निर्भीक हो कर कहता है:—

Though out doors be driving snow,
Though it hail and though it blow,
Rattling every window pane;
Yet I never will complain,
In my heart lie all the while,
Love's own Portrait and spring's smile.

सारांश दुखवाद से छुटकारा पाने के लिये, कविता के लिये दो ही उपाय हैं:—एक तो वह दुख का मर्म समझे; यह जाने कि दुख उसका अपना नहीं, जगती की सम्पूर्ण जड़ता का वह दुख है, और दूसरे अपने दुख को सिर्फ भाफ और पानी के रूप में न रख कर "मुए चाम की हाय से, लोह भसम हो जाय"– को स्मरण कर दुख में भी वह बल उत्पन्न करे जो प्रार्थना में है। करुणा तभी सार्थक और रस-सृष्टि की एकमेव अधिकारिणी मानी जावेगी जब कि टैनीसन के समान वह यह जान लेगी कि—

The song of woe
Is after all an earthly song;

तभी वह स्वामी राम की सी मस्ती में गा सकेगी—

वह कोई और होंगे जो रोके रुलाके मरते,
हम रकीबों को हँसा जायँगे मरते मरते।
खाक़ में जिस्म किसी और का मिलता होगा,
हम तो भूखों को खिला जायँगे मरते मरते।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

६—'हम संक्रान्ति काल के प्राणी, बदा नहीं सुख भोग' 'नवीन'

अन्त में मुझे हिन्दी के सभी कवियों से, और काव्य प्रेमी पाठकों से क्षमा चाहना है। हिन्दी के सभी कवियों से इसलिये कि उनके प्यारे "वादों" पर (मसलन छाया—,रहस्य—,हृदय—,दुख—,हाला—, प्याला—,समाधि—, आदि आदि) मैंने आघात किया है; क्योंकि "छाया" का रहस्य मेरे कूड़-मगज में बिलकुल प्रवेश नहीं कर पाता, उस विषय में अपनी मूढ़ता मैं मानता हूँ। हाँ, कल्पना-रंजन मैं समझ सकता हूँ जोकि जीवन के यथार्थ वास्तव संग्राम से भाग कर जा छिपने का मनोहर कुञ्ज है। हृदय को मैं बिल्कुल शरीर-शास्त्रगत, यानी दिमाग के नीचे और पेट के ऊपर और जेब से जरा ही दूर या कहें बहुत नजदीक, प्राण वायु से परिचालित चीज मानता हूँ; और जो "हृदय" बहुत स्पन्दन करे उसे रोगी मानता हूँ, और दुख की चर्चा तो ऊपर काफी कर ही चुका हूँ।

रही बात पाठकों की, सो उनमें दो प्रकार हैं। एक तो वे जो पहिला ही पृष्ठ पढ़कर यह आठ-दस पन्ने साफ उलट जायेंगे, यह समझ कर कि यह दिमागी महाभारत है। दूसरे वे जो धैर्य और स्थैर्य के साथ इतने पृष्ट पढ़ने का और गुनने का कष्ट उठावेंगे। उनसे मुझे यही कहना ठीक है कि मैंने मौलिक या सनसनीदार ऐसी कोई खास बात नहीं कही है। केवल संक्रान्ति-काल की पुकार को दुहरा भर दिया है।

पण्डित दीनानाथ व्यास "विचित्र" की पहली रचना "हृदय का भार" भी मैंने देखी है। उसके कई छन्द तो अत्यन्त ही मार्मिक हैं। व्यास जी का कहने का अपना एक ढङ्ग है और वह बहुत साफ और चुभता हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"अरमानों की चिता" के कई गीत अत्यन्त उच्चकोटि के हैं। उनमें मानव जगत की मर्मवेदना को छूनेवाली आर्तता और आर्द्रता है। प्रकृति के सम्बन्ध में कवि की दृष्टि अत्यन्त पैनी है और पुराने गुलो बुलबुल के चक्कर से वह उठकर बहुत आगे पहुँच गया है। कई स्थलों पर कल्पनाओं ने नये नये रंगीन परिधान ओढ़े हैं और शब्दों की नक्काशी से बढ़कर (जैसे कि छायावादी कवियों में अक्सर पाई जाती है) भावना की गहराई और बारीकी बहुत कोमल और चित्ताकर्षक है। किसी कल्पना को अत्यन्त प्रभावोत्पादक ढंग से चित्रित करने की कला में व्यास जी अपना विशेष स्थान रखते हैं। पाठक के दिल को छूते छूते उस पर अपना पूरा असर डालकर उसे पानी पानी कर देना और फिर उसके मुँह से ओह ! और आह !! के सिवाय कुछ न निकल पाये—यह व्यास जी के कवि की अपनी विशेषता "अरमानों की चिता" के कई गीतों में स्पष्ट है। "अरमानों की चिता" व्यास जी के करुण-कवि-हृदय का बहुत ही आन्तरिक, स्पष्ट एवं निखरा हुआ चित्र है। "पंतजी" ने कविता की परिभाषा चित्र-राग की है। राग की तो मैं नहीं जानता, मगर चित्रण "अरमानों की चिता" में खूब ही है। भावानुकूल प्रकृति के रंग पलटने का वैसे ही प्रकृति के अनुकूल भाव परिवर्तन दोनों का अध्ययन, सूक्ष्म रेखाओं और हल्के रंगों के साथ हुआ है।

कविता की अन्यान्य परिभाषाओं में इब्सन ने "Writng doom's day records of the soul" [रूहानी क़यामत की तवारीख] कहा है। आत्मा के अभिशप्त होने या उसके कयामत के दिन की तो बात मुझे मालूम नहीं मगर "अरमानों की चिता" में अवश्य आत्मा की मसोस और कसमसाहट मौजूद है। जड़ता के बंधनों से छुटकारा पाने की अभिलाषा जिस सौन्दर्य प्रिय आत्मा में है उसे "अरमानों की चिता" निश्चय ही प्यारी लगेगी। सौन्दर्य के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अतीन्द्रिय तत्व की "शाश्वत टोह" मनुष्य करता है। राह अत्यन्त ही रपटीली, वासना के कर्दम से भरी है, मगर राह वही है। उस पर जाते हुए लोग आँख दूर पर अटकाये हुए हैं। हरदम खयाल मंजिल का है और होठों पर गुनगुनाहट है :—

"दोनों हैं अनजान चलो अब साथ चलें!
हंसते रोते बीती कहते,
इस अमिट राह पर चले चलें!!

पीछे से प्रतिध्वनित हो रहा हो :—

"जहाँ न हो जग की मनमानी,
आह पले पी लोचन पानी,
निष्ठुरता की लौ पर गिर गिर—
कोई व्यर्थ जले।"

और अन्तरतम से कोई बोल रहा हो :—

"जहाँ न हो सीमित जग बन्धन,
उठे वेदना उन्मन उन्मन,
जहां किसी के पीछे काया,
दिन दिन घुले गले।"

कवि का भविष्य उज्वल है और उत्तरोत्तर आंसुओं के घुमड़ते पारावार और निश्वासों के कुहरे को भेद कर वह उस आलोक-किरण को पाले जहाँ जाकर कविता न रहकर जीवन बन जाती है। यही मंगल कामना है।

संक्रान्ति-दिवस
१४-१-१९४०

प्रभाकर माचवे
एम० ए०, साहित्यरत्न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ अपनी भी !

"हृदय का भार" के बाद मेरे टूटे और बिखरे हुए अरमानों को मैंने "अरमानों की चिता" के रूप में एकत्रित किया है। "हृदय का भार" के कृपालु मित्र-पाठकों ने एक मीठी सी शिकायत दुहराई थी कि "आखिर कब तक रोते रहोगे? आखिर इस "रुदन वाद" का कभी अन्त भी होगा?" उन्हें मुझसे ममता है इसलिये मेरे भविष्य में सुधर जाने की उम्मीद पर उन्होंने अपने दिल को समझा लिया था। आज वे "अरमानों की चिता" को देखकर तो कलेजा थाम कर भी मुश्किल से ही विश्वास कर सकेंगे कि उनका विश्वास इस कदर क्यों चकनाचूर कर दिया गया। "अरमानों की चिता" में मेरा और भी "भीषण और वीभत्स" रूप देखकर उनका कलेजा ही बैठ जायगा। पर कवि उन्हें आशा कैसे बँधाता कि वह उन्हें आत्म सन्तोष दे सकेगा। यह उसके बस की बात तो है नहीं। वह तो अन्तर की एक मीठी सी, अस्पष्ट किन्तु "समझ में आ जाने वाली" आवाज़ के सहारे अनजान में बढ़ा जा रहा है। दुनिया की बोली में वह पीछे भी जा रहा होगा। और "अन्तर" की आवाज़ अपने पीछे युगों की पीड़ा, चीत्कार, हाहा-कार लिये पनप रही है—फल फूल रही है। उसे उस "आवाज़" पर भरोसा है। जिसके आश्रय में वह पला है, बढ़ा है उसमें भला मिट जाने से वह इन्कार कैसे करे? अन्तर हु आ है तो बस इतना ही कि वह छन्दों की कुटिया छोड़कर गीतों के स्वप्न महलों को देखने लगा है। और ये "वाद"! ये तो किसी दिन अपनी "चिता" में स्वयं ही भस्म हो जायेंगे।

कवि कुटीर
१-१-१९४१ } —दीनानाथ व्यास "विचित्र"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पण्डित श्यामविहारी शुक्ल "तरल" ने मेरी "चिता" को रूप देने, पण्डित भगवतीप्रसाद वाजपेयी और मुख्यत: प्रो० प्रभाकर माचवे एम० ए० साहित्यरत्न ने इसे सर्वांग-सुसज्जित करने और पण्डित गणेश पाण्डेयजी, संचालक छात्रहितकारी पुस्तकमाला ने इसे आप तक पहुंचाने में मुझ पर जो आत्मीयता की वर्षा की है उससे उऋण होना हमारे लिये असंभव है।

—लेखक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अरमानों की चिता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हिय के कोमल भार ! ठहर जा, मत हो यों बेगाना !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं

किसी पथिक का भूला पथ मैं—तिनके सा ठुकराया।
किसी वृद्ध का दग्ध हृदय मैं, दुखित हृदय की छाया।
शव से गिरे सुमन सा हूं मैं, वह हूं जिसे न सुख का भान।
किसी हृदय की सुप्त वेदना, कवियों का केवल हूं गान।
ललित लता में सुप्त ग्रीष्म की प्रलयंकर मैं आशा।
किसी प्यार से त्यक्त अभागे की हूँ अन्तिम भाषा।
भाग्य हीन का दुर्दिन मैं हूं, सरिता का गिरता सा कूल।
याकुल की हूं प्यारी आशा, या विधि के कर की मैं भूल।
विरही के शव के पथ की हूं पद से उड़ती धूल।
या किसी प्रेमिका का अन्तिम निराश मय अर्पित फूल।
दीवाना बन सागर तट पर मैं बटोरने वाला सीप।
किसी विगत प्रेमी का मैं निर्जन निशीथ का झिलमिल दीप।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परिचय

आते ही बस लगे पूछने—"क्या है तेरा नाम ?"
रे अनजान देश के बासी ! परिचय से क्या काम ?

"इस निकुंज का माली तू ! हे सखे, चाहिये निशि विश्राम ।
दो आंसू, दो बोल—यही हो जायेंगे रहने के दाम !
यों तो सभी सधन गृह जाकर भरते अपनी साखें ।
कभी किसी ने निधनों की पोंछी क्या बहती आँखें ?
तेरा क्या परिचय ? कहतो, जब यही हाल है तेरा ।
मैं तो सम्बलहीन अकेला क्या हो परिचय मेरा ?
इतना सुन्दर रम्य धाम तू कहता नहीं ठिकाना !
क्या दूं परिचय सखे ! आज रहकर कल मुझको जाना ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस पार

रजनी गहन तिमिर आच्छादित सागर गरज रहा बरजोर ।
मेघावृत नभ बरसाता है साँय साँय का भीषण रोर ।
तरिणी नहीं न कर्णधार है देश अपरिचित है मेरा ।
हे निर्दय ! तू मुझे बुला कर देगा कहाँ बसेरा ?
तेरा ही संगीत साथ में वाणी जर्जर बिखरे तार ।
पीड़ा का है भार देव ! कैसे मैं जाऊंगा उस पार ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रतीक्षा

कितने दिन की प्रबल प्रतीक्षा पर आये थे मेरे द्वार।
मिलने के पहले ही प्रियतम लौटे जाते क्यों साकार।
ठहरो, मेरी सुन भी लो, दो दो बातें हो जाने दो।
रुके हुए अरमानों की अब गंगा आज बहाने दो।
कितने दिन बरसों से बीते कितनी प्रलयंकर रातें।
तुमसे स्वप्न मिलन में बीतीं करते करते बातें!
मैं तो आज संजो लाई हूं फूलों से यह थाली।
बिना भेंट कैसे लेजाऊं तुम्हीं कहो यह खाली।
स्मृतियों का कुंकुम लेकर, लेकर लोचन का पानी।
तुम्हें लगाने तिलक चली आई ले गद्गद् वाणी।
विरह वेदना ने पहरा दे तुम्हें ढूंढ पाया है।
अपलक नेत्रों की रस्सी में तुम्हें बांध पाया है।
क्षणभर बैठो मन की मेरी लगी आज होजाने दो।
बहुत दिनों में आये हो प्राणों को ज़रा जुड़ाने दो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मदहोशी

मेरे ये अरमान बिखेरो मत, समेट लो चुन चुन कर।
इनको मत ठुकराओ मन को मार चढ़ालो निज सिर पर।
इस दुनिया में जान न पाया क्या है प्रेम कहानी?
"मैं करता हूं प्यार तुम्हे"—बस कह दो यही जवानी।
तुम मुझसे मिल जाओ प्रियतम, मैं तुमसे मिल जाऊं।
मिलकर मिटने का अनन्त सुख मैं कैसे पा जाऊं?
मादक सी मदिरा हृदयों की बूंद बूंद ढुलकाना।
हो जाऊं मदहोस भूलकर मुझे न कभी जगाना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दैव से

उनका तो यह नियम होगया, सान्ध्य गगन में आना।
कसक वेदना की धुंधली गाथा चुपके लिख जाना।
उनके जाने पर कितनी आँसू की लगती झड़ियाँ।
पीड़ा के अंधियारे में कैसे पढ़ लूं वे कड़ियाँ।
मैं स्मृति के बीजों को ले रोदन वसुधा पर बोती।
विरह कूप का जल दे देकर फल आशा के सेती।
हे दैव ! सु-अवसर ऐसा दे हम एक प्राण होजायें।
वे मेरे उर में आकर चुपके से लौट न जायें !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पीड़ा

सन्ध्या ने धुंधली साड़ी से अपना नया किया श्रृंगार।
जाना है उस पार सिन्धु के पहुंचेंगे कैसे उस द्वार?
तू माँझी मैं पथिक बनूं पतवार बनेगा वह आला?
इस असीम सागर जल पर शर सम पथ बने निराला।
तीनों की फिर हृदय तरी लहरों से खेलेगी अठखेल।
बतलाओ तो निष्ठुर कैसे पन्थ कटेगा विधि अवहेल?
तू कहना अपने प्यारे की कोई कसक कहानी।
वह सुन लेगा लहरों का नयनों में भरकर पानी।
व्याकुल सा तब मैं लहरों का नृत्य देखता जाऊंगा।
अपनी पीड़ाओं को आहें भरकर शीघ्र जगाऊंगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जुदाई

दिल को जैसे तैसे समझा चाहा तुझे बुलाना।
घर होते भी देख मुझे झट से कर दिया बहाना।
तेरे दर पर चला जा रहा था लेकर कितने अरमान।
केवल तेरे "यहाँ नहीं है" ने कर दिया मुझे बेजान।
कितना अच्छा समझ रही हो यों मुझको ठुकराना।
इस ठुकराने में पाया है मैंने बस अपनाना।
मुझसे भगभग दूर आज तू चाहे पिण्ड छुड़ाना।
तेरी याद मुझे करती है उतना ही दीवाना।
मधु सी मीठी समझ सहूंगा तेरी अरी जुदाई।
देखें कब तक किये चली जायेगी तू निठुराई ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नन्ही बस्ती

कुचले हुए नष्ट अरमानों की यह पथिक ! निशानी ।
सूखी उर मरु भू में केवल यहीं दीखता पानी ।
पथिक ! युगों के साधन से संचित कर पाया इतनी,
बैठो तो, यह मिट्टी ही है मेरी अमिट निशानी !
ये हैं अस्त व्यस्त इतिवृत्त के बिखरे पृष्ट पुराने,
इनको एकत्रित करने में बीते कई ज़माने !
पथिक ! जगत् कहता है इसको विधना का परिहास ।
मेरे रुदन भरे जीवन में, यदि है तो यह हास !
दुनिया की नज़रों में मेरी टूट चुकी यह प्याली !
इसकी मादकता आजीवन मेरी देखी भाली ।
दोनों आंखों में मेरी छायी रहती चिर मस्ती ।
बियाबान में केवल यह है मेरी नन्हीं बस्ती !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सांकी से

साकी ! मादक मदिरा लाकर भर दे मेरी प्याली,
सुधि विहीन हो जाऊं पीकर विचरूं सृष्टि निराली !
मेरा तेरा !—यहाँ न छूटा फिर क्यों रुकता साकी !
ढाले जा, मत रोक हाथ यों, अभी बहुत है बाकी।
ढाल, ढाल ! कुछ और ढाल !! खाली करदे मैखाना,
तेरी याद शेष रह जाये भूले आना जाना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्याला

ज्योंही पैर बढ़ाया, देखूं कैसी है मधुशाला ?
परिचित कहने लगे "न जाओ, यह है पंथ निराला !"
मैंने कहा—"छान बैठे हैं शतशः पंथ पुराने,"
वे बोले—"उन्माद सुप्त को ,आया व्यर्थ जगाने।"
अब तो हम जग गये, देखते ही साकी भर लाया।
प्याला ! प्याला !! साध पुरानी की है केवल छाया।
होठों को छूते ही प्याला स्वयं हुआ पीने वाला।
मैं बन बैठा साकी, हाला ! तेरा पंथ निराला !
पीते पीते हुआ शिथिल मेरा सारा जग मय जीवन।
एक घूंट में भूल गया मैं मेरा सारा अपना पन।
उस मादक तन्द्रा में साकी ने पूछा—"कैसी हाला ?"
मैं बोला—"मत पूछ, दिये जा भरभर कर साकी प्याला।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरी प्याली

कुछ तो दे ! कुछ दे भी दे !! मत जाने दे तू खाली !
अरे ज़रा सी भरदे ! भरदे !! भरदे मेरी प्याली !!!
आंखों में घन घटा घिरीं तेरी माया की चाह मुझे,
मिटता जाता भान, नहीं काया की अब है आह मुझे।
आंखों में है नशा समाया ज्ञान नहीं तन मन का।
जीवन भी बन्धन सा है अब दिल जलता दीपक सा।
आशाएँ सब मिटी जा रहीं नाश हो रहा अपना।
जो कुछ था मेरा पहले वह होता जाता सपना।
जीवन भर बस भटक भटक कर तुझको मुझ में पाया।
स्वप्न खिलौना छोड़ आज यह चन्द्र खिलौना भाया।
मैं का नाश आज होने दे तू में मैं मिलने दे।
भ्रम का ताला तोड़ मुझे अब अपने में जलने दे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वे दिन ?

बचपन भी कैसा था जिसमें लाज न खेद न पीड़ा थी !
बिना बिचारे मधुर विरह था और स्नेह की क्रीड़ा थी !
मिलन-वियोग पंथ कांटों का–समझी इसे कहानी।
इसके पथिक बने क्या होगा ? —समझी सब नादानी।
सभी स्वर्ग था, सुख था—सुख से दिन बीते जाते थे।
दुख तो दूर,–शब्द "दुख" को भी नहीं कभी सुन पाते थे।
बिना बुलाये एक दूसरे के घर था आना जाना।
मीठी कहा सुनी ! क्या सुख था !! दोनों का मिलकर गाना।
कितने दिन यों बीत गये, बीतीं ऐसी कितनी रातें।
किन्तु आज ही बीती सी मालुम होती हैं वे बातें !
अब उनकी स्मृति भी दुखकर है मिलन घोर अभिशाप !
विस्मृति से यदि देख लिया तो हुआ घोरतम पाप !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फूल बन खिलने न पाये, झर गये अरमान मेरे !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत १

निज करों से लिख रहा हूं आज मैं इतिहास मेरा।

धूलि दिन भर संगिनी बन, पीत पट मुझको पिन्हाती।
चाँदनी से खेलता, निशिभर अनेकों गीत गाती!
तारकों से करुण गाथा, कह उठूं मैं हृदय भर कर,
वे सुनें पर दुख उन्हें क्या, इंगितों से मुस्करा कर।
कौन सुनता है किसी की चैन की बंसी बजे जो,
कौन पूछे पीर पर की, स्वार्थ को केवल भजे जो,
उर लेखनी मसि आंसुओं से विश्व सारा ग्रन्थ मेरा-
निज करों से लिख रहा हूं आज मैं इतिहास मेरा॥

प्रेम की छाया पड़ा मैं गुनगुनाता था मधुर स्वर,
दैव! इतना भी सहारा सह न सकता तू मृदुल तर!
विश्व ने पागल कहा, पर विश्व ही पागल बना था,
मृत्यु से पल पल लड़ा फिर विश्व क्यों मुझसे तना था।
वेदना मेरी बनी उपहास जगमें, क्या कहूं मैं?
विश्व परमानन्द पाता घोरतम जो दुख सहूं मैं।
विश्व की संवेदना से भर चुका है हृदय मेरा।
निज करों से लिख रहा हूं आज मैं इतिहास मेरा॥

मैं क्षुधा का नाम लेकर पेट भर लेता निरन्तर,
देख सरिता प्यास बुझती क्रम यही रहता निरंतर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कौन कहता—घर न बाहर-जब जगत भर वास मेरा,
विश्व भर हँस कर निहारे जो लगा दूं एक फेरा।
इस हास्य में ममता छिपी या और कुछ है कौन जाने?
कौन चिन्तित है किसी पर कौन है अपने विराने।
देखली ममता जगत की क्षणिक सा मनहर सुडेरा।
निज करों से लिख रहा हूं आज मैं इतिहास मेरा॥

जगती बनी है सेज मेरी नील चादर गगन की ले,
पवन की मृदु थपकियों से लोरियों का अलभ सुख ले।
स्वप्न सरिता में हिलोरें मृदुल सी जब ले रहा मैं,
भाव की चट्टान पर टकरा गया जर्जरित हो मैं।
स्वप्न टूटा, आह का फिर भर दिया भण्डार मैंने।
उल्लास भर देखा जगत ने विश्व आहागार मैंने।
आह ही उल्लास हो तब विश्व में विश्वास मेरा?
निज करों से लिख रहा हूं आज मैं इतिहास मेरा।

वेदना रणभूमि मेरी, कसक का कारण विषम तर,
आशा निराशा दो दलों में युद्ध ठनता है निरन्तर।
घाव पीड़ा के लगे हैं तड़पता बेचैन होकर,
प्रेम जिसको मैं कहूं अभिनय कहेगा विश्व हँस कर।
दो शब्द भी लिखना कठिन है बन रहा अभिशाप मेरा।
पागलों में नाम है, क्या कम यही इतिहास मेरा?
विश्व के उपहास से सन्तुष्ट हूं—है हास मेरा।
निज करों से लिख रहा हूं आज मैं इतिहास मेरा॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत २

लुट रहा है आज क्यों यह प्यार का संसार मेरा ?
प्यार का संसार लेकर चल पड़ा था हाट में,
क्रय किया सर्वस्व पाया लुट गया मैं राह में।
मैं लुटा फिर भी यहाँ क्यों हो रहा प्रतिकार मेरा ?
लुट रहा है आज क्यों यह प्यार का संसार मेरा ?

कोकिला की काकली को किन करों ने है बनाया ?
घाव तो सूखे हुए थे हरित करने कौन आया ?
सुमन सा था विश्व जो पर अब बना क्यों खार मेरा ?
लुट रहा है आज क्यों यह प्यार का संसार मेरा ?

खिलखिलाते पुष्प भी क्या जानते दुख क्या बला है ?
हृदय पट पर आंसुओं की चित्रकारी क्या कला है ?
तंत्रिका मनहर, हुआ फिर बेसुरा क्यों तार मेरा ?
लुटा रहा है आज क्यों यह प्यार का संसार मेरा ?

चंद्रिका अंगड़ाइयाँ ले कर रही मनुहार मेरा,
हरित मखमल पर धरा लेने चली है प्यार मेरा।
विश्व कैसे देख ले फिर प्यार का अभिसार मेरा ?
लुट रहा है आज क्यों यह प्यार का संसार मेरा ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उर-विहंग आशा तृणों के नीड़ में कैसे समाया ?
चंचु में दो कण लिये दुर्भाग्य को वापिस बुलाया ?
विश्व ने हँस कर कहा केवल यही उपहार तेरा।
लुट रहा है आज क्यों यह प्यार का संसार मेरा ?

हार को भी जीत मानी कर लिया विश्वास इस पर,
कोमल करों में क्या पता था छिप रहा है विषम विषधर,
सुनसान रजनी थी, यही आशा रही, होगा सवेरा।
लुट रहा है आज क्यों यह प्यार का संसार मेरा ?

हाल पर मेरे तरस इस विश्व को आने लगा क्यों ?
अवहेलना ही धैर्य बनकर शान्ति पहुँचाने लगी क्यों ?
शान्ति है फिर भी गिरा जाता मनोहर डर सुडेरा।
लुट रहा है आज क्यों यह प्यार का संसार मेरा ?

15245

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत (३)

क्यों निकलने को व्यथित हैं आसुओं के गान मेरे !
क्यों बरसने पर तुले हैं मेघ से अरमान मेरे !

उठ रहीं लहरें भयंकर शांत पारावार उर में,
लग उठी क्यों आग मेरे राग मय अनुराग पुर में ?
प्रलय सा क्यों हो रहा कोकिल विनिन्दित कंठ स्वर में ?
अपनी अनल की ज्वाल से मैं जल रही क्यों आप उर में ?
आँख में मचलो न अब ओ अश्रुओं ! नादान मेरे
क्यों बरसने पर तुले हैं मेघ से अरमान मेरे !

दिन निकलने ही न पाया आगई क्यों सान्ध्य वेला ?
काकली सुन भी न पाई छा गया भादों अकेला ।
फूलने पायी न मेरी उर-कली पतझाड़ झेला ।
लग रहा मेरे जगत में बेकली का आज मेला ।
रोने लगे नीरव व्यथा से आज क्यों ये प्रान मेरे ?
क्यों निकलने को व्यथित हैं अश्रुओं के गान मेरे ?

घूर कर देखो न मीनो ! सलिल के ऊपर न आओ !
शिशिनि ! अपनी रागिनी से मुझ जली को मत जलाओ !
आरक्त नेत्रों से न देखो आज प्रिय मधुमास ! जाओ !
चरण छूती हूँ न मेघो ! उमड़ उर वृज पर न छाओ !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रोने रुलाने को बहुत आहत तड़पते प्रान मेरे !
क्यों बरसने पर तुले हैं मेघ से अरमान मेरे !

दिल में भरा भण्डार था निस्सार अब उसको लुटाना !
चाह थी—थी प्यार करती आज यह किसको सुनाना ?
क्या सोचती थी ? व्यर्थ है सोती हुई स्मृतियाँ जगाना !
प्यार ! वह सौन्दर्य ! केवल आज कवि का रुदन गाना ।
कवि रुदन जो सत्य हो जाता कहीं भगवान मेरे !
क्यों निकलने को व्यथित हैं अश्रुओं के गान मेरे ?

अश्रुओं ! कुछ तो बहो हो जाय हलका भार मेरा !
आशे ! दया कर तुम हटो हो जाय जीवन सार मेरा !
व्यग्रते ! क्यों कर रही हो बेसुरा यह तार मेरा !
दुर्भाग्य ! यह बेड़ा बहाया आज क्यों मंझधार मेरा !
विश्व भर तो फैलने देते करुण ये गान मेरे !
क्यों बरसने पर तुले हैं मेघ से अरमान मेरे !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत ४

आज प्रिय के आगमन पर आँख में जलधार कैसी ?

प्राण-सागर, सुख-तरणि, पतवार-आशा से तरी थी।
वायु अरमानों, लहर-उद्वेग, किंचित् ना डरी थी।
कूल की आशा लिये यह डूबती मँझधार कैसी ?
आज प्रिय के आगमन पर आँख में जलधार कैसी ?

सोये हुए अरमान के जगने मचलने का समय था,
विकलता के उर-अजिर में विकल होने का समय था,
सजनि ! मंगलगान में यह निबल करुण पुकार कैसी ?
आज प्रिय के आगमन पर आँख में जलधार कैसी ?

त्याग दे चिन्तित हृदय का भार यह मंगल सुवेला,
चातकों का स्वाति में कैसा लगा है आज मेला !
शिखिनी घटा के प्यार में मरुभूमि की उनहार कैसी ?
आज प्रिय के आगमन पर आँख में जलधार कैसी ?

भूल अपनापन सभी अरमान प्रिय की भेंट धरदे,
आज जाकर प्राण को प्रिय के चरण उपहार करदे।
प्रिय मिलन आवास में फिर वासना साकार कैसी ?
आज प्रिय के आगमन पर आँख में जलधार कैसी ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत ५

यह न उर की कामना थी।
वह हृदय में दर्द मेरा जान ले यह भावना थी ॥
मैं न मुकलित सुमन था जिस पर भ्रमर की तान टूटें !
मैं न कोकिल का मधुर स्वर विरहियों के प्रान छूटें !
मैं न सुन्दर था कि जिस पर राह चलते तीर छूटें !
मैं न ज्योतिर्मय शिखा जिस पर पतंगे आन टूटें !
मैं क्षणिक सी लहर था, तुमको प्रलय की धारना थी !
यह न उर की कामना थी !

तुम न जानोगे कि चातक स्वाति पर क्यों मर रहा है ?
तुम न मानोगे पपीहा पीउ पिउ क्यों कर रहा है !
तुम न जानोगे कमल में भ्रमर बन्दी हो रहा है ?
तुम न मानोगे कि मधु में हृदय यह क्यों रो रहा है ?
कौन जतलावे तुम्हें आखिर मुझे क्या चाहना थी ?
वह हृदय में दर्द मेरा जानले यह भावना थी ।

ज्योत्स्ना हंसती, हंसे, जीवित रहे उसका विहँसना !
सुमन मुसकाते रहें स्थायी रहें वह मुसकराना !
चुभती रहें स्मृतियाँ मधुर स्थायी रहे उनका सताना !
विश्व का यह न्याय ? बस आबाद हो वह आशियाना !
अस्तित्व तक मेरा न रह जाये, जगत की कामना थी !
वह हृदय में दर्द मेरा जानले यह भावना थी !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत ६

उनको हृदय का हार कर लूं !
दिल चाहता है किस तरह उनको हृदय का हार करलूं !
ऐसी मिलूं ऐसी मिलूं दो प्राण एकाकार करलूं !
किस तरह निज अंक में जी भर उन्हें मैं प्यार करलूं !
हार अपनी मान कर भी शेष की मनुहार करलूं !
उनको हृदय का हार करलूं !

आंसुओं के सजल पथ से यदि उन्हें स्वीकार आना !
क्यों न प्यासे लोचनों में अमर आंसू धार करलूं !
जो उन्हें प्रिय हो सजालूं, फिर न कहदें-कौन आये !
आज पाजाऊँ उन्हें तो पृथक निज संसार करलूं !!
उनको हृदय का हार करलूं।

एक चितवन में हृदय का आज हलका भार करलूं !
प्रेम पूजा से रिझा उनपर सभी अधिकार करलूं !
आज जो मिल जाय केवल दर्शनों भर की अनुज्ञा,
लोचनों भर देख उर में मूर्ति को साकार करलूं !
उनको हृदय का हार करलूं !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माँगना क्या ? माँगना उनसे उन्हीं को है मुझे जब,
क्यों न साहस कर हृदय पर आज मैं अधिकार करलूं !
डूबती उर तरणि स्मृति उतुंग लहरों से प्रपीड़ित,
सर्वस्व देकर क्यों न मैं उनको सुदृढ़ पतवार करलूं ?
उनको हृदय का हार करलूं !

संगीत जो प्रिय हो उन्हें तो आज ऐसा गान गाऊं,
उर के सभी अरमान-लय में तंत्रिका अभिसार करलूं !
चारों तरफ घिर कर सतातीं वेदना साकार सी हो,
जी चाहता है स्वर्ग से भी श्रेष्ट कारागार करलूं !
देख कर सहसा कहें जो रूप यौवन है कहाँ अब ?
उनके रिझाने को चलूं कुछ तो सजूं श्रृंङ्गार करलूं !
उनको हृदय का हार करलूं !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत ७

मांगलो—की रट लगाकर यह कहो क्या दे सकोगे ?
प्यार केवल चाहती-यह चाह पूरी कर सकोगे ?

रंक हूँ, का मांग लूं जब मांगने की वस्तु तो हो,
देखे पपीहा कब तलक घन स्वाति की कुछ आस तो हो !
हाथ खाली, निस्सहाया, पंथ निर्जन हूँ अकेली,
चाहती सजलूं बनूं कुछ, क्या करूं बन कर नवेली ?
मैं नहीं वह प्रेम का जिसने कभी भी मोल जाना !
मैं नहीं वह कोकिला जिसने मधुर स्वर बोल जाना।
प्रेम ही मेरी डगर जिसका न मैंने अंत जाना।

खोदिया सब भूल बैठी हाय, मैं अपना बिराना।
मांग लूं, क्या मांग लूं, जब मांग लूंगी दे सकोगे ?
माँग लूं तुम को खुशीसे बोल दो क्या दे सकोगे ?

विश्व की मत बात पूछो, नाश हो तो भी हंसेगा !
फूलती फलती धरा में धूल उड़वाकर रहेगा !
मृदुल थपकी दीं सुलाया प्रथम जिस पर प्राण दे कर,
चैन अब पाता वहीं जैसे बने अब जान लेकर !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साथ ही होलें न जाना पथ तुम्हारा और मेरा !
पहुंचना है उस जगह होता नहीं सन्ध्या सवेरा !
विरह आँधी में बहे तो बिछुड़ कर कब मिल सकेंगे !
चरण चिन्हों के सहारे कब तलक फिर जी सकेंगे।
मौन रहता है रहो पर क्या मुझे फिर पा सकोगे ?
दो घड़ी का मिलन है फिर इस घड़ी को ला सकोगे ?

मैं भी समझती थी कि कुछ हूं, हो सकेगा कुछ न मेरा।
विश्व ने निज स्वार्थ वस जीवन किया मेरा अँधेरा !
अन्याय से भी शीश अपना विश्व क्यों नीचे झुकाये।
पाप करके भी जगत यह पुण्य का डंका बजाये !
स्नेह था पर आज तो यह वन गया अभिशाप मेरा !
मुग्ध जिस सौन्दर्य पर थी वह बना सन्ताप मेरा !
प्रेम के अमरत्व की सुनती रही अदभुत कहानी !
अमरत्व तो है दूर अब तो भार सी लगती जवानी !
यह समस्या है विकट कैसे इसे सुलझा सकोगे ?
प्यार केवल चाहती यह चाह पूरी कर सकोगे ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत ८

मेरी पीड़ा कौन संभाले ?

पी पी तो मत करे पपीहे ! अब तो छिदते भाले !
मेरे रोने पर श्यामा तुम हँसती कैसी बात निराली ?
मुझे न क्या यह चुभना होगा कहो पिकी मतवाली ?
तेरे सुखद दिनों पर क्या मैं मन में ईर्ष्या लाऊं ?
क्यों न चहकता डाल डाल पर फिरूं कहो तो आली !
अपने दुख सा सब का ही दुख,
अपने सुखसा सब का ही सुख,
यही जानती होतीं जो तुम क्यों पड़ते जीने के लाले ?
मेरी पीड़ा कौन संभाले ?

दो ही दिन को ठहरा हूँ पर तुमने नेक न दया दिखाई !
परदेशी को ठुकराने की कैसी तुमने शिक्षा पाई ?
देश अपरिचित का आया हूं कौन यहाँ है मेरा अपना ?
पल का यह संयोग न करना चिर वियोग का भीषण सपना ?
जाकर पुनः कौन आयेगा ?
किसको कौन कहाँ पायेगा ?
किंचित कर लेतीं प्यार न पड़ते उर में गहरे छाले !
मेरी पीड़ा कौन संभाले ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत ६

ये प्रलय के गान मेरे !

वेदना के नीड़ में चिर स्मृति विहंगम सो रहा है।
स्पर्श करते ही प्रकम्पन मनस जग में हो रहा है!
कामनाएँ छटछटाती श्वास अन्तिम ले रही हैं।
हाय कोई अपरिचित सा विकल मन में रो रहा है।
फूल बन खिलने न पाये झर गये अरमान मेरे।
ये प्रलय के गान मेरे।

फिर धधकने को व्यथा और विरह उमड़ें आरहे हैं।
अश्रु घृत बन प्रज्वलित करते निरन्तर जा रहे हैं।
फूस का छप्पर बनाया नाम था "विस्मृति कुटी" पर,
बाढ़ स्मृति सिकता कणों के नष्ट करते जा रहे हैं।
कैसे वहाँ जाऊं जहाँ पहुँचे न सायं गान मेरे !
ये प्रलय के गान मेरे !

मुस्कुरा कर अरुणिमा उपहास करती है निरन्तर,
डूबता दिन मान लिखता है सदा अवसान अक्षर,
राका अमाँ की रात बन वहती प्रलय की करुण गाथा,
शून्य सांझ विहान तंत्री से निकलते वेदना स्वर।
भीषण अनिल में शांति चिर कैसे मिले क्योंकर मिले अब ?
टिमटिमाते दीप की रक्षा करें भगवान मेरे !
ये प्रलय के गान मेरे !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत १०

मिलन के वे चार दिन ही बस हुए आधार मेरे।
कह गये थे आज तक लौटे न प्राणाधार मेरे!

स्पर्श सुख अनुभूति में मैं आज तक तल्लीन सी हूँ,
सलिल निर्वासित, धरा पर छटापटाती मीन सी हूँ,
अधर रस के पान की वह सुखद स्मृति कैसे भुला दूँ?
"दो तनों में प्राण केवल एक" को कैसे मिटा दूँ?
यौवन छलकता मद भरा क्यों बन्द फिर व्यापार मेरे?
कह गये थे आज तक लौटे न प्राणाधार मेरे।

दामिनी से दमक जाते नित्य ही वे हृद-गगन में,
तड़प उठती काँप उठती हाय! मैं मधुमय लगन में,
वेदना पीड़ित जिधर देखूँ उधर सब रो रहे हैं,
पिय विरह के आँसुओं से हाय सब मुँह धो रहे हैं।
किसने उन्हें बिलमा दिया जो रुक गये सरकार मेरे!
कह गये थे आज तक लौटे न प्राणाधार मेरे!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत ११

सह रहा हूँ विपतियों को दर्शनों के हित तुम्हारे !

सुख दुख की कड़ियाँ गाता मैं
बढ़ा जा रहा था मग डगमग ।
किन्तु वेदना के सागर की
रोक रहीं थीं लहरें प्रति पग ।
पीड़ा चीख उठी अन्तर से,
आंखें सभय, सजल हो आईं ।
रुदन मेघ ने अश्रु बहाये
तड़ित ज्योति सी स्मृति घिर आईं ।

जीवन बना पात्र गाथा का,
पीड़ा करती चरित्र चित्रण ।
प्राण शब्द में विकसित होकर,
हुई कहानी यों परि पूरण ।
पढ़ने लगा निठुर जग उसको,
करने लगे सुकवि संकीर्तन ।
सुनते सुनते पहुँच गये—
अन्तिम पन्ने तक उन्मन उन्मन ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अन्त सुनते ही निकलते लोचनों से अश्रु खारे ॥
सह रहा हूँ विपतियों को दर्शनों के हित तुम्हारे।

मैं रोता रजनी आ जाती
हंसता हूँ तो उषा बुलाती!
मौन रहूँ तो उर-नभ में
छाले तारक बन पीड़ा छाती।
गाता हूँ तो व्यथा सताती
चुप बैठूँ कोकिल गा जाती।
प्रिय दर्शन की आशा बंधती,
स्मृतियाँ सब चौपट कर जातीं।

दिन रातों के यान चढ़ा मैं
निज पथ दुखित काटता जाता।
कोस कसक तड़पन के कितने
निकल गये पर मैं न अघाता।
तब के बिछुड़े कभी मिलेंगे,
यही एक विश्वास लिये मैं—
शलभ सदृश इस दीप शिखा पर-
बार बार गिर बच जाता मैं।
कौनसी मृग मोहनी! मैं बढ़ रहा जिसके सहारे?
सह रहा हूँ विपतियों को दर्शनों के हित तुम्हारे!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत १२

ऐसा जमकर हाथ पड़े, बस दर्द न हो तड़पन भी क्यों हो ?
तेरा खड्ग अमर होजाये, व्यापक बलिवेदी भी क्यों हो ?

कभी सोचता था जीवन भी-अरमानों की एक कहानी !
खुलकर क्यों न खेल ली जाये, करली जाय न क्यों मनमानी ?
सम्मुख यह दुनिया थी, साकी था, मैं था मस्ताना,
मयखाना था अद्भुत जिसमें ठाठ जमा था नया पुराना ।
दीवानी थी, ओफ ! जवानी, आंखों के सम्मुख था साकी !
अधरों पर, आंखों पर दिल पर लाली थी फिर था क्या बाकी !
दिल बेकाबू हुआ कि आगे बढ़कर ज्योंही हाथ बढ़ाया,
साकी पीछे हटा—कि दुनिया का आंखों में दृष्य समाया ।
देखा पीछे-खड्ग तनी है; मन में अब उलझन भी क्यों हो ?
ऐसा जम कर हाथ पड़े, बस दर्द न हो, तड़पन भी क्यों हो ?

ओ कातिल ! मैं धीरे धीरे भुला रहा हूँ याद पुरानी ।
इसी बीच तूने सोचा है, इस असि की है प्यास बुझानी ।
प्यास बुझेगी इसकी पीकर मेरे गरम रुधिर का पानी ।
चलने दे स्मृतियों में-खूँ में-तेरी लोलुप खड्ग पुरानी ;

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पोस रहा था अभिलाषा को, सपनों से मैं खेल रहा था।
पीड़ा की मीठी तड़पन में हार रहा था जीत रहा था।
चारों ओर निराशा ही के तान तने थे गहरे काले,
किसी तरह मन को समझाकर फोड़ रहा था दिल के छाले।
कुछ कुछ समझ लिया जीने को, चाह और जीने की क्यों हो?
ऐसा जमकर हाथ पड़े बस दर्द न हो, तड़पन भी क्यों हो?

कब तक करें उसासें मेरी सांसों की गहरी रखवाली?
कब तक बन्द रखूँ आंखों में तेरी सूरत वह मतवाली?
गीली आंखें मिटा रही हैं धीरे धीरे मेरा यौवन।
डूब रही है हंसी विश्व के कटुपन में बस पल पल छन छन।
कभी जान मुझको प्यारी थी-आज भार वह जो कि प्यार था,
कभी विश्व क्रीड़ा का स्थल था-आज भार कल जो दुलार था।
मेरी जान मुझे बेगानी फिर भी इसे संभाल रहा हूँ।
स्मृति पादप अब सूख रहा है फिर भी इसको पाल रहा हूँ।
मेरे कर्मों ने ही मुझको आज यहाँ तक पहुँचाया है।
हसरत भरा जनाजा मेरा कातिल! खूब सजा पाया है;

चाह यही है उठे धूम से, अरमानों का यही तक़ाज़ा!
फूल गिरें पर कहीं पत्थरों से मिट जाय न ओफ! जनाज़ा!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिखते जाना कदम कदम पर महानाश की करुण कहानी।
मुझे सुला देना धीरे से उसपर लिखना "अमर निशानी"
"टूटी हसरत, टूटी आशा, टूटी मीठी प्रेम कहानी,
विश्व त्यक्त टूटी सांसों की यह ही है बस अमर निशानी"
युग युग जीवित रहे कहानी, फिर मज़ार फानी भी क्यों हो ?
तेरा खड्ग अमर हो, मेरा क्या हो ?-यह चिन्ता भी क्यों हो ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत १३

कुछ बढ़ती सीं कुछ हटती सी, कदम लड़खड़ा रहे तुम्हारे।
हिरनी से नैना चंचल थे कुछ खोज रहे थे प्राण तुम्हारे।
तुम यहाँ अचानक आ पहुँची,
मैं जान गया पहचान गया।
तन ने पा लिये प्राण अपने;
स्मृति का मेरा महमान गया।
तुम मुस्काईं, मैंने बढ़कर
कुछ कहा किन्तु ना जान सका।
तुम समझ गईं कुछ सिमट गईं
पर बढ़कर भी तो पा न सका।
तुम फिरीं, मुड़ीं, कुछ बढ़ीं किन्तु कुछ कांप रहे थे पैर तुम्हारे।
फिर साहस कर तुम चली गईं
देखा न लौट कर भी तुमने।
इतने वर्षों में मिले किन्तु
आखिर की निठुराई तुमने।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्या चाह नहीं थी रुकने की
क्या मन में था कुछ प्यार नहीं ?
फिर आकर हृदय जलाने में
विष बुझे तीर सी मार नहीं ?
सुनती जाओ ! सुनती जाओ !!
मैं भूल रहा था तुम्हें प्रिये !
फिर आकर सूखे घावों को—
[क्या उचित यही था तुम्हें प्रिये !]
—उन निर्दय कर से छील छील—
—हँसते हँसते कुछ ठसक लिये—
[जैसे मैं कोई था न कभी]
—तड़पा तड़पा कर प्राण लिये ॥
पर निरपराध का ख़ून हिला देगा तंत्री के तार तुम्हारे ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत १४

प्यार की साजन सदा क्या हार होगी ?
पास बैठे थे ज़रा दिल खुल न पाये,
दिल हमारे हाय ! कुछ भी जुड़ न पाये !
मिलन की घड़ियाँ हमें अंगार होंगी !
यह समय का फेर था, हम मिल न पाये,
रह गई मन में, न कुछ भी बोल पाये,
वे मिलन-घड़ियाँ हमें क्या खार होंगी ?
कैसे मिटे वह याद रह रह दिल जलाये;
अमर हों वे क्षण जगत नित गान गाये,
डूबती नैया कभी क्या पार होगी ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत १५

क्यों हंसे जग जब रुदन ही हो चुका है गान मेरा !
मधुर भोले बालपन में स्वप्न भी साकार देखा।
उठती जवानी में अनोखे प्यार का सब तार देखा।
करता सु-यौवन प्यालियों में मत्त सा अभिसार देखा।
दो दिलों के प्रेम विनिमय का खुला व्यापार देखा।
सोना लुटाती मुस्कराती कूकती प्रति डालियों पर,
कोकिला देखी, उषा को प्रकृति का उपहार देखा।
पल्लवों के लोचनों पर विश्व का व्यापार देखा।
सौरभ लुटाते सुमन देखे लुटते उन्हीं का प्यार देखा।
अलि सहृदयता में निठुरता का मधुर संचार देखा।
प्यार को लुटते हुए इस विश्व के बाज़ार देखा।
प्यार ही जब हार है तो क्या रहा अभिमान मेरा !
क्यों हंसे जग जब रुदन ही हो चुका है गान मेरा।

श्री लुटाते मञ्जरी का सुरभिमय अनुराग देखा,
कोमल लताओं में द्रुमावलि को खिलाते फाग देखा।
कमल कोषों में छिपाते प्यार देखा अलिगणों को।
सरित को देखा सुनाते गान मृदु नीरव बनों को।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्यामल घटा में शिखिनि को व्याकुल लगाये नेत्र देखा।
चातकों को चन्द्र किरणों से मिलाये आँख देखा।
चन्द्र देखा विहंसते इस विश्व पर अमृत लुटाते।
चन्द्रिका से मुसकराते स्रोत देखे गान गाते।
पक्षियों की चहक में अनुराग देखा प्यार देखा।
तितलियों की विविधता में विश्व का सब सार देखा
खिल रहा सब जग न जाने क्यों हुआ अवसान मेरा ?
क्यों हँसे जग जब रुदन ही होचुका है गान मेरा ॥

दृष्टि डाली जगत पर दिन में यहाँ तो रात काली।
किसका यहाँ देखा बदन है छा रही जिस पर सु-लाली !
दिन रात सावन की झड़ी में कौन रंग रेली मनाये ?
हो रही आल्हा जहाँ पर कौन मंगल गीत गाये ?
रुदन का जीवन जहाँ हो, प्रेम की वीणा चढ़ाकर—
—कंपित करों से कौन उसमें प्यार स्वर लहरी मिलाये ?
बिछुड़ जाना ही जहाँ के राज्य का फरमान होता-
मिलन का जाकर वहाँ मानव निरर्थक बीज बोता।
तड़पन यहाँ अठखेलियों से व्यग्रता को साथ लेकर—
आशाऽभिलाषा को चिढ़ाती इंगितों से मुंह बनाकर,
जाकर दिखाऊँ मैं वहाँ किसको मचलता मान मेरा ?
क्यों हँसे जग जब रुदन ही हो चुका है गान मेरा ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक नन्हा दिल संभाले बढ़ चला था राह पर मैं
विंध गया एक तीर से घायल हुआ चौराह पर मैं
लौटना पीछे असंभव, बैठना दूभर हुआ, पर
देखते ही सामने दुर्भाग्य ने खींची विषम तर—
विष से बुझी पैनी कटारी, कर दी हृदय के पार किसने ?
ले गया मुझको वही मुझसे, व्यथा दी हाय जिसने !
तन के सभी परिमाणुओं में रम गया वह विष हलाहल,
घाव भी रहता हरा बहता रहे जब रक्त पल पल।
इस घाव का उपचार भी करने न वाला है यहाँ पर।
चिर स्राव से उर में भरा आहों कराहों का ललित सर !
—यह सरोवर देख कर किसको रहेगा भान मेरा !
क्यों हँसे जग जब रुदन ही हो चुका है गान मेरा !

अब मुझे दिखता नहीं मधुमास का प्रति वर्ष आना,
अब मुझे दिखता नहीं कोमल लता का खिलखिलाना।
चांदनी जिस उर अवनिपर नित्य उन्मत राग गाती।
वह न जाने क्यों अमाँ की घोर नीरवता सजाती ?
मय छलकती लोचनों की प्यालियाँ लपका उड़ाने,
मय का पता तो दूर, मैखाना किधर है कौन जाने ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अधखिली थी जब कली तब सोचते यह सुमन होगी।
देखा न जिसने पूर्ण यौवन किस तरह कह दें सुभोगी ?
प्यार का पालन जहाँ शिशु सा किया था स्नेह से तब—
विरह की पीड़ा सुशासन कर रही जमकर वहाँ अब;
ऐसे नगर में बास है तब कौन करता ध्यान मेरा ?
क्यों हँसे जग जब रुदन ही हो चुका है गान मेरा ?

याद करता उन दिनों की सैकड़ों अरमान उठते,
केवल इशारों पर हज़ारों याद है तूफान उठते।
अश्रु कण जिनमें छिपी है अमिट युग युग की कहानी।
याद है कैसे तड़पते प्रान गिरते बूँद पानी।
अब न है अवशेष कुछ भी मिट गये सपने सुनहले।
आहत हृदय नभ बीच घिर अब वेदना के मेघ फैले।
स्वर्ण सा जीवन चला इसको कहो कैसे बचाऊँ।
उस रूप को छिद्रित हृदय में आह कैसे रोक पाऊँ ?
जो घोरतम मिलता मुझे आलोक की क्या चाह होती।
विरह ही रहता सदा तो मिलन की परवाह होती ?
दिल न हाथों में रहा उमड़ी व्यथा बन गान मेरा।
क्यों हँसे जग जब रुदन ही बन चुका है गान मेरा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत १६

रह गई है प्रेम की मेरी अधूरी ही कहानी !
एक दिन वन पंछियों का गान मधु वरदान सा था।
पुतलियों में अमर छबि का सर्वदा आह्वान सा था।
यह सुनहला हास्य उनका हाय ! प्यारा प्रान सा था।
प्रेम की मृदु पीर से क्यों उस समय अनजान सा था ?
क्या लिखूँ नयनाश्रु से या आह से कह दूँ ज़बानी।
रह गई है प्रेम की मेरी अधूरी ही कहानी।
लोक लज्जा से सदा दुख हृदय में मैंने छिपाया।
प्यार करता था उसे मैंने न जग को यह बताया।
विवश हो आंसू गिरे चुपचाप उनको भी सुखाया।
पिय मिलन की व्यग्रता में नित्य आहों को जगाया !
हा ! कहूँ किससे रही अब शेष केवल स्मृति निशानी !
रह गई है प्रेम की मेरी अधूरी ही कहानी।

प्रेम की लौ बह गई वन पुतलियों का आज पानी।
भार सहते चोट खाते बन गया मैं अमित ज्ञानी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पीत पल्लव या सुमन सूखे रही मेरी निशानी।
धूल में मिलते हुओं का नाम हो यदि पूर्ण ज्ञानी।
कब किसी की पीर सुनती है भला दुनिया दिवानी ?
रह गई है प्रेम की मेरी अधूरी ही कहानी।

मैं व्यथित पागल सभी की दृष्टि में है कौन मेरा ?
देवि ! सागर तरिणि सा कुछ दिन रहा था साथ तेरा।
रात दिन मारा फिरा कोई न कहता तू वही है।
स्वार्थमय संसार यह पहिचान वास्तव में सही है।
यह न सुनता है करुण उर का रुदन जग क्रूर मानी।
रह गई है प्रेम की मेरी अधूरी ही कहानी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोल भी दो !

आया अकेला मैं जगत में, कौन देगा साथ मेरा ?
संकटों के गर्त गिरता-कौन पकड़े हाथ मेरा।
हमदर्द जो मेरे यहाँ "दो शब्द" तक का साथ देंगे।
आ पड़ेगी कौन उसको हृदय से जो बाँट लेंगे।
दुःख क्यों करती प्रिये ! आखिर तुम्हारा साथ कबतक ?
संयोग के दिन चार हैं बादल विरह के लय प्रलय तक।

प्रथम परिचय का दिवस कैसे सकूं मैं भूल बाले !
चांदनी सकुचा रही थी सुरभि सजती शुभ्र प्याले।
प्रकृति को साक्षी बनाकर प्राण दो-कर एक डाले।
क्या पता था-घिर रहे दुर्भाग्य के हैं मेघ काले।
प्रणय के परिणाम की सुरभी सुनाती थी कहानी !
नभ निवासी रो रहे थे हंस रहा था विश्वमानी !!

इस जगत के हाल पर कब तक तरस खाता रहूँ मैं।
कब तलक उर थामता आंसू बहाता ही रहूँ मैं !
मिलन ही इस विश्व में है विरह का इतिहास बनता।
दो घड़ी सुख की यहाँ फिर संकटों का पाश तनता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विश्व ही जब नष्ट होगा तो मिलन अस्तित्व कैसा ?
नित्य ही बिछुड़न रहेगी दो घड़ी आनन्द कैसा ?

जिस तरह हम तुम मिले थे उस तरह होगी जुदाई।
एक दिन अभिसार था तो एक दिन होगी बिदाई।
प्यार के इस दोल में दो पैंग तो भर दो निराले।
खिलते सुमन की मुस्कराहट में छिपे अवसान प्याले।
निज अंक में लेकर तुम्हें जब मैं मधुप के गान गाता।
चातक तभी शशि के लिये क्यों घोर विरहोच्छ्वास लाता ?

चिर विरह के गीत क्यों यह विश्व गाता ही रहेगा ?
स्वाँति के लघु बूंद को कबतक पपीहा "पी" कहेगा ?
इस पुराने गान से जग प्रीत इतनी कर रहा क्यों ?
प्रेम दीपक पर पतंगे सा बना जग जल रहा क्यों ?
मधुमास आयेगा सदा औ' आयंगे सावन लुभाने।
पर न तुम होगी न मैं हूँगा न होंगे ये ज़माने।

फिर यहाँ पर कौन अपनी कह सुनायेगा कहानी ?
विश्व तो यह मौन है फिर खुल सके किसकी सुवानी ?
आज जिसको प्यार कहतीं कल वही बस श्राप होगा।
आज जो अपना वही कल घोरतम अभिशाप होगा।
कुछ क्षणों का साथ है तो हृदय अपना खोल भी दो।
जब तलक हम तुम यहाँ दो बोल मीठे बोल भी दो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत १८

कितना मादक था वह जीवन !

वह दिन था, जब कलित—
—कुसुम सा जीवन लहराता था।
पल पल में मेरे जीवन का
राग बहा जाता था।

जीवन क्या है ? जगती क्या है ?
जीवन कौन बला है ?
जाना, प्रेम वारि मृदुसिंचन
से तन सुतरु पला है।
अनजाने में प्रेम लुटाया,
बदले में वैसा ही पाया।
जिसे हृदय की भिक्षा दी,
वह भूल गया तन मन धन ॥ कितना...

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था निवास साधारण फिर भी
महलों को ठुकराया।
हार-जीत की वीणा थी
पर विजय गीत ही गाया।
था निर्बल फिर भी जगती को
समझ रहा था निर्बल !
कितने ही उद्यान लगाये,
कहाँ, पता था है जल ?
जीवन का परिणाम, मृत्यु,
की प्रतिदिन की अवहेला।
दुख की घड़ियों को प्रतिदिन
मैं समझा सुख की बेला।
जहाँ पहुँच जाता था मैं
था वहीं राग-रँग नर्तन ॥ कितना...

क्यों हंसते हो मुझे देखकर
बिगड़ी हुई दशा है।
वही सुरा है वही चषक
पर यह विपरीत नशा है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरे ही निवास में बसता,
था जिसको सौंपा उर,
जिसके बल दुनिया को जीती,
कुंठित है अब वह गुर।
शब्द "प्रतीक्षा" नहीं सुना था
वही "प्रतीक्षा" जीवन !
फिर भी मेरे लघु जीवन के
शेष रहे हैं कुछ क्षण,
मुझमें जो सौभाग्य मानता
आज अशुभ मम नाम।
कैसी है विचित्रता भी यह
विधि भी कैसा वाम ?
जिधर देखता हिल जाता था
जगतीतल का कन-कन। कितना...

केंद्रित था सौन्दय मुझी में
आँखों में अद्भुत बल था।
जीवन जाग्रति आशाओं का
मेरा मन सुन्दर स्थल था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चिन्ता व्यथा निराशा जैसे
शब्द मुझे थे याद नहीं,
विरह वेदना व्याकुलता से
हुआ न था बरबाद कहीं।
किन्तु हाय ! वे स्वप्न सुनहले
हो न सके साकार।
बालू के दुर्गों सा पाया,
देख न मैं आकार प्रकार।
वे सोने के दिन भी क्या थे ?
नहीं जानता था क्रन्दन।
हो सकता है यही कहा—
जाता हो जग में "परिवर्तन"॥ कितना...

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत १६

यह जीवन मेरा भार भार,
वेदना व्यथा का सार सार !

व्यंगों की वर्षा अपार;
अपवादों की मृदु मृदु फुहार !
"अपनों" का भी विपरीत भाव,
है "प्रेम" शब्द से सघन चाव।

अपने भी हैं न यहाँ अपने,
आशाएँ केवल हैं सपने !
मीठी बातें हैं तीक्ष्ण धार !
करती हृदय स्थल क्षार क्षार !!

जीवन केवल मरुभूमि सदृश,
यह मृग जलवत् है सभी अदृश,
जीवन है केवल सूनापन,
एक चाह ऐसी है जिसमें,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ढूंढ़ रहा जग "अपनापन"।
शान्ति ! शान्ति की चाह !!
"शान्ति" क्या है ?
—केवल है भ्रान्ति !
इसी भ्रान्ति को मूल मानकर
जग करता है क्रान्ति !

"प्यार", "प्रणय", "प्यारे", "प्रियतम"
हैं केवल शाब्दिक भ्रान्ति।
केवल जल की "दो बूँदों" में
इस जीवन की शान्ति !
चातक को केवल बूँद बूँद !
है यही प्रेम है यही सार ! !
ओ बहते आँसू बोल बोल !
रे देश छोड़कर चला अरे ! रहने में ही है मोल मोल !!

इस देश में सब विपरीत हुआ,
कोई न कहे क्या तुम्हें हुआ ?
कोई न पूछता है आकर
क्यों कष्ट पारहे हो प्रियवर !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब जगह यही व्यवहार तार !
जीवन है केवल हार हार !

हैं जले हुए दिल यहाँ सभी,
हैं यहाँ सताये हुए सभी !

दिन रात यहाँ भादों सावन;
है कौन वस्तु पावन पावन !
सबही तो गल गल छार छार !
जीवन है केवल मृदुलभार !!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत २०

सजनि ! क्यों उर में है सूनापन !

आँधी है पर वायु नहीं है,
उथल पुथल मच जाना।
मदु विलास अधरों का सूखा,
मरुभू सा हो जाना।
नहीं है कुछ भी अब सूनापन"

बार बार रोकूं फिर भी ये,
नयन उन्हीं पर जाते।
स्वप्नों की उलझन में मिल मिल
नित प्रियतम खो जाते।
नहीं क्यों खोता है सूनापन ?

विरह वेदना मय तन्द्रा में
दीखे वही सलोना।
उस निर्मम की निठुराई ने
किया मुझी पर टोना।
हाय ! यह व्यर्थहुआ है बंधन !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत २१

पीड़ा मालति वत् फूल फूल री !
स्मृति मृदु को उर कानन में
भर फूल फूल री फूल फूल री !

पलक घनों के मृदु गर्जन में,
अश्रु मेह रिमझिम नर्तन में,
पुतली की चंचल चितवन में,
भरती जा प्रियतम की छबि—
–सब चक्षु विश्व के कूल कूल री ॥

मनुहारों के मृदु उपवन में,
यौवन अलि मादक गुंजन में,
प्रणय-लता के सुमन सुमन में,
निज सौन्दर्य हिण्डोल लोल—
झुक झूम झूम सखि! झूल झूल री ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत २२

उनका कैसा है पैमाना !
जीवन भर पीती हूँ फिर भी मिटे न आना जाना ॥
उत्कंठा में रात बिताऊँ,
अपलक नेत्र देख थक जाऊँ,
मैखाने में उन्हें न पाऊँ,
मैं तो राग विहाग बनी वे बने सुमंगल गाना ।
विरह सेज पर मैं सो जाऊँ;
चन्द्र ज्योत्सना भर लिपटाऊँ,
चक्षु अजिर में उन्हें खिलाऊँ,
वे आशा की किरण बने मेरा सपना बन जाना ।
जब मैं उनको पा जाती हूँ,
मिलते ही मैं खो जाती हूँ,
खोने में उनको पाती हूँ,
ज्यों ही हाथ बढ़ाती हूँ छलछला उठे पैमाना ।
मैं साकार बिरह बन जाऊँ,
शलभ रूप में मैं मिट जाऊँ,
मय पी पी अस्तित्व मिटाऊँ,
मैखाने से फिर भी मेरा मिटा न आना जाना ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत २३

कैसा मधुमय घूँट पिलाया ।
उर के सूने से निकुंज में कहीं खिलीं थीं सुमनावलियाँ,
उन्हें देख बरबस लोचन से टपक पड़ीं झरझर मृदु बुंदियाँ ।
सुख भी भूला,
दुख भी भूला,
अभिनव जग में
ला बिठलाया ॥

मस्ती सागर में बहतों को
नहीं चाहिये तट छाया ।
बेसुध से पूछा, क्या पूछा ?
क्या खोया है ? क्या पाया ?
इसका क्या उत्तर दे वह
क्या छोड़ चला ? क्या लाया ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत २४

करुणा का जग तो है अपार !

जिसमें गल गल कर पिघल पिघल,
यह विश्व हृदय,
बन बह जाता है अश्रु धार ॥

यह वसन्त ! यह कोकिल कल स्वर !
यह निर्झरी भरी स्वर मर मर !
यह जल धार प्रवाहित सर सर !

मेरे जीवन में बस ये ही—
धीरे धीरे तीव्र बेग से—
[मनमाने पर अनजाने से]
बन जाते जलते अँगार !

चातक की रट में क्या अनर्थ !
कोकी के स्वर में कौन अर्थ !
नभ सूना सा जग सूना सा—
इनके भीतर प्रति श्वास श्वास,
बहता है करुणा का सागर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कितने प्राणों को चातक सा—
[जो लक्ष्य पूर्ति में पागल सा—]
जल का मिल जाता है अधार !

कितने इन हृदय–पपीहों को
[उस "पी" "पी" में,
जिस धुन में वह बरबाद हुआ—]
प्रिय दर्शन को हो मुक्त द्वार !

बस, एक चिरन्तन आशा में,
"पा जाने" की मृदु भाषा में,
इस जग का कण कण तड़प रहा,
यह आदि काल से भटक रहा,
बस "पाने" के उद्गम अनादि से,
फूट, बही यह अमिट धार ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत २५

उपकार भी इस विश्व में
अपकार बन कर ही रहेगा।
क्या हमारा स्वप्न सा संसार
मिट कर ही रहेगा ?

विश्व का अभिशाप मुझको,
लोकमत का श्राप मुझको,
वेदना की आग में यह
राख बनकर ही रहेगा।

कितना अगम यह पथ हमारा,
अस्तित्व ही कितना हमारा ?
जगत का भ्रूभंग यह, उर पर हमारे
वज्र सा गिर कर रहेगा॥

विश्व को अपनी पड़ी क्या ?
फिर हमें किसकी पड़ी क्या ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विरह ! वह मीठा विरह !! बस
इस जर्जरित जीवन तरी का
कूल बनकर ही रहेगा ॥

दिल यही होता कि जाकर
दूर पर दुनिया बसालें ।
प्राण के वह पास हो
या हृदय में उसको बसालें ।
वरना यहाँ के झंझटों में
अमर भी मर कर रहेगा ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत २६

कौन तपस्या फली,
　　　　कि मैंने अपना अब संसार बसाया।

बरसों "अपना" गलागला कर,
आहों को पाला ला लाकर,
व्यथा-बीज प्राणों में रोपा,
अश्रु-स्रोत से सींच सींच कर।
कितने टोने ! अरे, किये टोटके !!
　　　　—तब पौधा पनपाया ॥
　　　　—फिर भी कैसे कह दूँ कब मैं—
　　　　बैठ सकूँगी इसकी छाया ?

सूनेपन की माटी लाकर,
नेह आह टीसों का भर कर,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्मृति-स्फुलिंग से संजो संजो कर,
अरे जगत ! यह आज न जाने कैसे
मैंने विरह प्रदीप जलाया !

कैसे समझाता इस जग को,
सभी बुरा कहते इस मग को,
पर जग में इतना बल है कब,
जो छू ले मधुरी सी कोमल—
मेरे जग की निर्गुण काया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत २७

मैं भूल गया अपना पन !

शैशव के भोले पन में कितने पुतले घड़ डाले,
फिर बिगाड़ कर नये बनाये आंसू भी कुछ डाले,
भोले पन में "लाल" गवाँया
शिशुता है चांचल्य, इसी से
कुछ भी हाथ न आया।
भोलापन है शैशव इसमें केवल रोदन रोदन !

यौवन के बादल मँडराये, चातक को अब चाह हुई।
घन को देख पपीहा बोला—"पी" की अब परवाह हुई।
चातक ने "पी" "पी" को पाया,
मैं इस "पी" "पी" में भरमाया।
कैसे पाता "पी" "पी" क्या है ?
—नहीं यही पहिचान।
मुक्ता बरसे पर मैं जाना,
नन्हीं बूंद अजान।
चातक को "पी" मिला, हाय ! मैं ज्यों का त्यों हूँ निर्धन !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब मद मिटा शिथिलता लेकर आई अब सूनापन।
अंधकार बस अंधकार में कुछ देखा अपनापन।
देखा निशि जा रही, जल रहा झिल मिल दीप पुराना।
चन्द्र-ज्योत्स्ना पहिन चुके हैं धूमिल धूमिल बाना।
कुछ "प्रकाश" हो गया मिट गया
मेरा सब सूनापन।
उस "प्रकाश" में "भान" हुआ
"अपने पन" का ज्ञाने हुआ,
बरबस चिल्ला उठा कहाँ हो मेरे "मोहन! मोहन"!!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत २८

रिमझिम रिमझिम बरस रहा जल, संचय कर सुकुमारी !
घुमड़ घुमड़ आ घिरी घटा घन,
चमक रही चल चपला उन्मन,
बूँद बूँद की चिंता क्यों मन भर भर ले सुकुमारी !

क्षणभर कहीं चूक मत जाना,
फिर बरसे यह किसे ठिकाना ?
आजा, आजा, भरले कुछ तो भरले रे सुकुमारी !

दिन बीता आई है रजनी
मत बिलम्ब करना री सजनी !
मद में भूली हाय ! कहीं मत
रह जाना यों खाली !
होता है वह जो कुछ है होना,
हंसी हंसी में इसे न खोना,
क्योंकि तृषित है कोना कोना,
आगा पीछा मत सोचे झट भरले री सुकुमारी !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कितने खड़े हुए हैं भरने,
इतने यहाँ कहाँ हैं झरने ?
बूँद बूँद के पड़े तरसने,
भरले, भरले क्योंकि रहे हैं
कुछ ही क्षण अब बाकी।
तुझसे कौन पूछने वाला—
—"प्यासी है भर ले री बाला !"
किसे पड़ी क्या तुझे कसाला !
अपनी तो निबटाना दुस्तर,
तुझसे कौन पूछने वाला ?
अपने बल पर भरले भरले, कुछ तो भर सुकुमारी !

सभी घात में यहाँ खड़े हैं,
अपनी अपनी लिये अड़े हैं,
दो बून्दों में नेत्र गड़े हैं,
ऐसे में भरना दुस्तर तर
फिर भी कुछ प्रयास करतो, करतो री अय सुकुमारी !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत २६

दुख तो दुख ही है पर जग में, सुख भी दुख का चेरा है।
संभल संभल कर चलो बटोही ! ज़ीवन घोर अंधेरा है।
कोई अन्तर तोल रहा है,
भीतर कोई बोल रहा है,
यहाँ नहीं हमजोल रहा है,
श्रुति पुरान कहते—जीवन यह दुखही दुख का घेरा है !

आज नया कल वही पुराना,
सदा पुराना है वीराना,
वैसे तो सबही अफसाना,
लाख पचे पर जान न पाये क्या मेरा क्या तेरा है ?

शान्ति सौख्य है भ्रम का बन्धन,
वैभव भी है कानन क्रन्दन
और विश्व यह पागल नर्तन,
जन्म मृत्यु में भेद कहाँ, यह चिड़िया रैन बसेरा है !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पाप वासना प्रबल प्रलोभन
जीत अहा ! कैसा सम्मोहन !!
निधि सा आरोहण अवरोहन !
हार जीत की मृग तृष्णा में जगत लगाता फेरा है।

यहाँ सदा है अपना अपना,
पर को कार्य सधे तक जपना;
परमारथ केवल है सपना !
यहाँ घोर हाहाकारों का नरदैत्यों का डेरा है।

तृष्णा का मोहक है फन्दा,
मनुज स्वयं मालिक या बन्दा,
जीवन भी अजीब सा धन्दा,
साँझ दुपहरी दूर यहाँ तो देखा तक न सवेरा है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत ३०

भर दो भिक्षा से यह झोली !

करुणा की आशिष दे देकर घर घर बोली बोली।
उत्सुक नेत्रों देख देख सायं से प्रातः होली।

आंखें जल से भरी हुई हैं
आशाएँ सब मरी हुई हैं,
अश्रु बिन्दु करते उर शीतल,
जगहै शून्य, शून्य में भी छल ;

निर्धन भिक्षुक की करुणा से भरी सुनी जब बोली।
घृणा स्पृहा से आंख फेर कर कटु वाणी कुछ बोली ॥

यह जीवन त्रिभुवन से भारी
भिक्षा केवल "दुःख" हमारी ।
बसुधा में दीपावली आई,
तब इस उर में होली छाई।

धन यौवन मद में जिसने उन्माद सुरा को घोली।
वे क्या जानें पीर पराई बोलें चुभती बोली ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

केवल "जय हो" सम्पति मेरी,
इसीलिये भिक्षा में देरी,
जगती आज हुई पावस मय,
फिर भी मेरा सब जग दुख मय।
जब सब सन्तानें ही तेरी हैं ये भोली भोली।
फिर क्यों इसी भिखारी के घर खेल रहा तू होली?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत ३१

दोनों हैं अनजान चलो अब साथ चलें।
किस ओर चलें, यह मत पूछो,
किस धुन में हैं यह मत पूछो,
पत्थर की रेखा सी स्मृति ले,
हम हृदय दबाये चले चलें !
जहाँ बिखेरा था शैशव
उन गलियों से ही आज चलें ॥ दोनों...

तुममें सुख है मुझमें दुख है,
तुम हो प्रकाश, मैं अँधियारा।
दुख सुख के इस सम्बल को हम
हिलमिल सम भागों बांट चलें।
धूप छांह से सुखी दुखी,
इस नगरी को हम छोड़ चलें ॥ दोनों...

तेरे सुख के घनश्याम घिरें
मेरे दुख की घनघोर गरज।
जब सहम उठे जगती मुझसे,
तब बरसो हे घनश्याम ! मधुर !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चातक से दोनों दृष्टि गड़ा,
करके अवगाहन चले चलें।
तुम उजियाली रजनी सी हो
मैं कृष्ण पक्ष का अंधियारा।
तुम चहक उठो, मैं कूक उठूँ,
झंकृत होजाये पथ सारा।
हंसते रोते बीती कहते
इस अमिट राह पर चले चलें॥ दोनों...

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत ३२

मुझे अब सीधी राह बतादो !
हारा थका कभी का बैठा एक राह पर ला दो ॥

बहुत दिनों का थका हुआ मैं,
पथ से भी हूँ विपथ हुआ मैं,
जीवन-नगरी भूल गया मैं,
जग-वन में हूँ स्वयं नया मैं,
साथी थे वे छोड़ गये सब,
अपनी अपनी राह गये सब,
अँधियारी रजनी में धोखा
देकर मुझको भाग गये सब।
केवल नाम वहाँ का जानूं
जाना मुझे जहाँ है।
पर न मुझे है ज्ञात, किधर को
मेरा नगर कहाँ है ? मुझे...

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुझे जरा सुस्ता लेने दो,
ठोकर खाकर संभल चुका हूँ।
रोदन को गा गा कर अब मैं
मृदु गीतों में बदल चुका हूँ।
क्रान्ति क्रान्ति के भाव लिये था,
शान्ति शान्ति में बदल चुका हूँ।
पहिले जो मैं समझ न पाया,
उसे खूब अब समझ चुका हूँ।
जिन तारों से झंकृत होता
उन तारों को मिटा चुका हूँ,
पहिले घृणित मानता, पर अब
अपना सरबस वार चुका हूँ॥ मुझे...

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत ३३

मनुआ, हम उस देश चले !
जहाँ न होवे कोई अपना,
ममता कहलाती हो सपना,
अपना कर इस जग का प्राणी
व्यर्थ न हमें छले !

जहाँ न सूखे घाव हरे हों
मन में मैले भाव भरे हों
अरमानों की धूल लगाकर
कोई हाथ मले !

जहाँ न आशा की बस्ती हो
जहाँ निराशा की हस्ती हो
पीड़ा की काया ही पी पी,
उर का रक्त पले !

जहाँ न हो जग की मनमानी,
आह पले पी लोचन पानी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निष्ठुरता की लौ पर गिर गिर
कोई व्यर्थ जले !

जहाँ न हो सीमित जग बन्धन,
उठे वेदना उन्मन उन्मन,
जहाँ किसी के पीछे काया,
दिन दिन घुले गले !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत ३४

है यही हमारी हस्ती !

पूछा—"तुम दीवानों को क्या एक यही है काम ?
उस दुनिया के गाने गाते जहाँ नहीं विश्राम !
इस जग के विकराल दृश्य पर तुम न ठहर पाते हो,
अकर्मण्य हो, इसीलिये दिल समझाने गाते हो,"
मैंने कहा—"प्रेम के दीवानों की संकरी उलझी राह,
है अनन्त तू क्या जाने ? है तेरी सीमित थाह ।
हम दीवानों को रहने की है छोटी सी बस्ती ।
दुनिया में रह कर तुम कैसे समझ सकोगे हस्ती ?
हंसते कभी, कभी रोते हैं, कभी मस्त हो जाते,
भोले से बच्चे बनकर हम कभी मचलते गाते ।
कभी प्यार में झूम पहुँचते वहाँ जहाँ जग पैठ नहीं ।
वह संसार हमारा जिसमें करुणा है, पर ऐंठ नहीं ।
यह जीवन जग में प्यारा है पर हमको है अभिशाप ।
इसीलिये बस रुदन हमारा, जग में बना प्रलाप ।
जगत मिटेगा, हम न मिटेंगे यही हमारी हस्ती ।
इतिहासों में अमर रहेगी दीवानों की बस्ती ।
है "विचित्र" इतिहास हमारा—घटनाएँ अरमान,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पतन निराशा, विजय विरह में अमर करें नित गान।
यहाँ सन्धि होती दिल से, पृष्टों को क्या है मान यहाँ ?
आहों की जब सेना बढ़ती हो जाता वीरान यहाँ ?
उच्छ्वासों, टीसों के मारे जगत काँप जाता है,
सदा तड़पना, सदा सिसकना—जग को कब भाता है ?
आशाओं के इस निकुञ्ज में सदा अनन्त बसन्त,
इस दुनिया में मचा रहे, पतझड़ जीवन पर्यन्त।
यहाँ शूल ही बिछे जिसे दुनिया कहती है फूल।
यहाँ सदा धिक्कार, मार असफलता ही की भूल,
धूल-मिलन ही खेल हमारा, जीवन एक पहेली,
दुनिया क्या समझेगी उसको जो कुछ हमने झेली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत ३५

इस सौदे को समझ न पाया !
मूल्य दिया, सर्वस्व दिया पर कुछ भी हाथ न आया।

दिल का सौदा खूब किया है,
बिना दाम के खूब दिया है,
गाहक खाली हाथ न लौटा,
इसीलिये बेदाम दिया है।
पर गाहक ऐसा न मिला जिससे कुछ मैंने पाया।

अपनी चीज़ मुझे देनी थी,
फिर कीमत भी क्या लेनी थी ?
देने से इन्कार नहीं था,
लेली जिसने जो लेनी थी।
पर ऐसा सौदा मुझको तो क्या, कभी किसी को भाया ?

देख रहा था गाहक आकर,
सौदा लेकर मन बहलाकर,
जाते थे—पर दिल से खाली,
आंख बचाकर कुछ मुस्का कर,
ऐसे निगुरे गाहक—मैंने फिर यह क्यों बाज़ार लगाया ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनका सब व्यवहार प्रदर्शन,
उनका था थोथा सब दर्शन,
सौदा तो सस्ता था, पर था
झूठी ममता का ही स्पर्शन !
फिर कैसे पट जाता उनसे, व्यर्थ यहाँ मैं आया ?

लेना दूर—समझ ना पाये,
फिर उनको कीमत क्या भाये ?
लेने निकला था मोती, पर
मैंने सीपों में से पत्थर पाये ।
ग्राहक में से कोई भी तो साथ न कुछ भी लाया ।

कौन बेच दे हीरे सा दिल,
माटी के दामों पर इनको ?
पागल का यह सौदा लेंगे
पागल पन होगा जिनको !
मस्ती की यह बस्ती, इसमें
गाहक कहो बनाऊँ किन को ?
किसे बुलाऊँ मय का प्रेमी एक इधर ना आया ।

जिसके दिल में दर्द नहीं है,
क्या बोलेगा बोली ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देने को कुछ पास नहीं है
खाली उनकी झोली ।
फिर भी तने खड़े हैं--"हम ही
बोलें इसकी बोली ।"
देख शेखियाँ, हंसी हमारी
मस्तानों की टोली ।

* *

उर में पाप, आंख में पानी,
छल का था सब सौदा।
तौल तौल कर रह जाते थे,
बस था खुला मसौदा।
उस सुरूर में हम चिल्लाये
"ऐसा कभी न होगा !"
अपनी आंखों के सम्मुख ही,
दिल का खून खून होगा।"
संसारी ने इस सौदे का यही मूल्य ठहराया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत ३६

कितना प्रबल वेग आँधी का, साथी हारे मैं भी हारा।
इधर उधर पानी ही पानी,
वायु किये जाती मन मानी।
घोर घटाएँ घिरी हुई हैं कहीं न दिखता मुझे किनारा।
सन्ध्या धूमिल साड़ी पहिने,
आई लक्ष्य विमुख अब करने,
इन भीषण लहरों के कारण जीती थी बाजी, पर हारा।
अब आई अँधियारी रजनी,
कब यह हदतंत्री अब बजनी ?
इस विनाश वेला में मांझी ! किसका गहूँ सहारा ?
मिट कर जो तैरूं लहरों पर,
देना सुला मुझे सागर तल,
जल समाधि पर कभी जलाना टिमटिम दीप तुम्हारा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत ३७

आज मैं दुनियां को पहचान गया !
"अपना" अपना" कहकर सब का बोझ गले पर बाँध लिया था।
कुछ को हृदय लगा कर ममता की डोरी में बाँध लिया था।
एक ज़ोर की आँधी आई,
"मैं" और "वह" में जो अन्तर है जान गया॥
फिरा वासना ग्रस्त इधर से उधर नाम ले "प्रेम" किया था।
मंजिल तो थी दूर "पास ही तो है" पर विश्वास किया था।
ज्यों ही ठोकर लगी कि मेरा "भान" गया।
फूलों में होते हैं कांटे यह मैं जान गया॥
थका हुआ था, शान्ति मिलेगी, यही समझ डेरा डाला था।
अपने लिये स्वयं ही मैंने दूध पिलाकर अहि पाला था।
उन विषाक्त दातों को अब मैं जान गया।
मैंने की थी भूल आज मैं मान गया॥
सदा रहा राही ही-बस मैं चलता रहूँ—यही समझाया।
मैं राही हूँ—इसीलिये आगे बढ़ना ही लक्ष्य बनाया।
पीछे जो देखा—नीरव !
सब छोड़ गये--विश्वास समाया।
राही बनने का ही सब अरमान गया।
आज मैं दुनिया को पहचान गया॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

SPS
891.431 D 45 A
15245

शुद्धि–पत्र

पुस्तक में कहीं कहीं अशुद्धियां रह गई हैं, पाठक उन्हें सुधार लेने की कृपा करें:—

पृष्ठ	पंक्ति	मूद्रित	सुधार
समर्पण	१०	सप्रम	सप्रेम
वेदना का वाद			
१	१३	the	The
१०	१९	beatiful	beautiful
११	१६	two	Two
१७	२	रपटीजी	रपटीली
अरमानों की चिता			
३	८	याकुल	व्याकुल
२१	३	भ्रप	क्रय
२२	११	डर	उर
२३	१६	शिशिनि !	शिखिनि !
२६	६	टूठें	टूटें
२८	१	मुझे	मुझे
२९	३	का	क्या
२६	१६	वहीं	वही
३०	५	मुझे	मुझे
३२	४	छुटछुटाती	छटपटाती
५२	१५	सौन्दय	सौन्दर्य
७५	१	चल	चलें
८५	१४	खून खून	खून न
८७	१४	समझाया	मन भाया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुद्रक—
नागरी प्रेस, दारागंज, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE